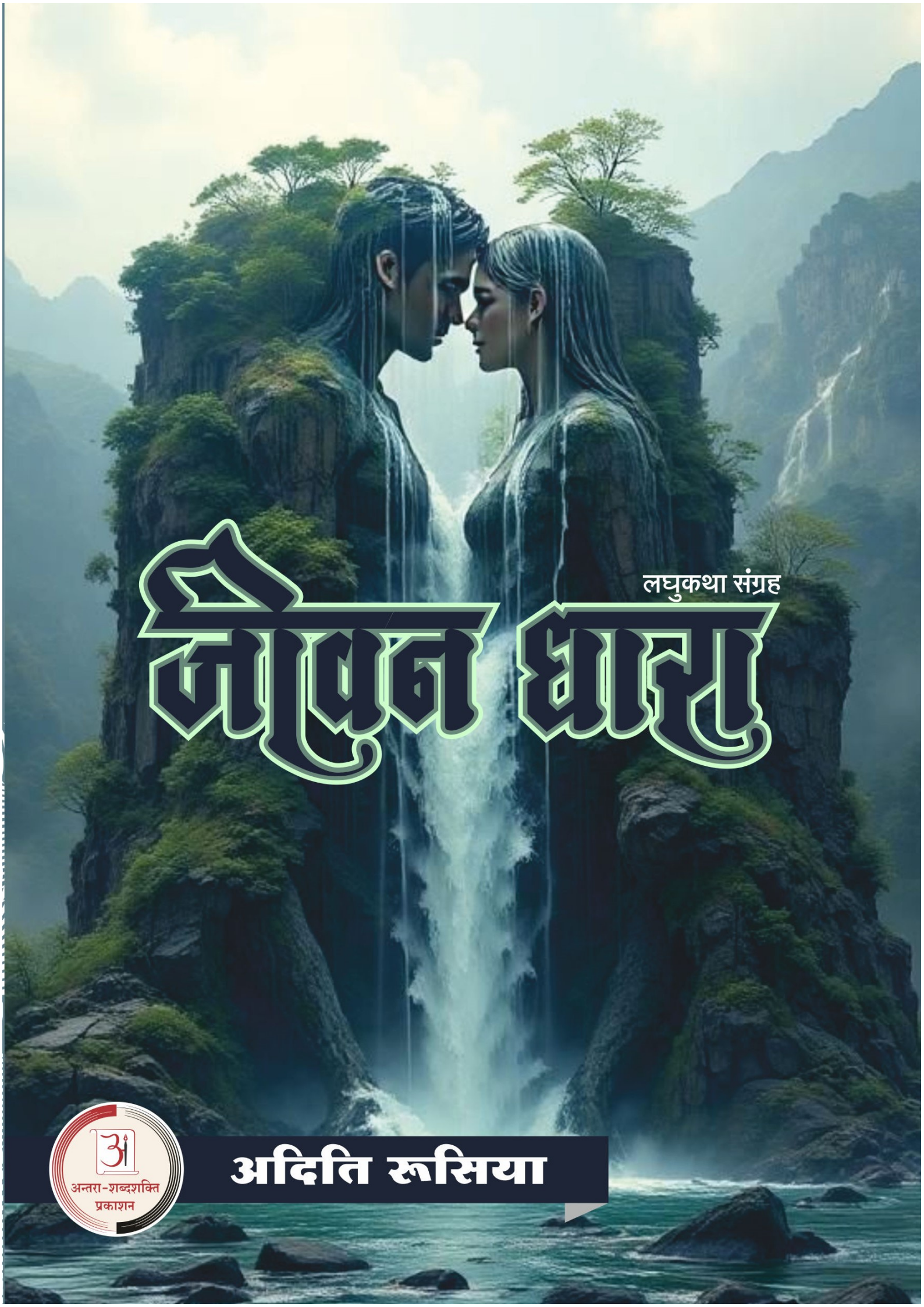

लघुकथा संग्रह

नैपुन धारा

अदिति रूसिया

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

जीवनधारा

लघु कथा संग्रह

अदिति रुसिया

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश (481331)

978-93-94528-48-2

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना

आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

मोबाईल- 9009423393

ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com

वेबसाईट- www.antrashabdshakti

प्रथम संस्करण- 2026, अदिति रुसिया

मूल्य- 360/- रुपये

मुद्रक- सोनी प्रिंटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY ADITI RUSIA

वैधानिक चेतावनी:- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

भूमिका

पढ़ने का शौक़ तो बचपन से था। बहुत सारी नॉवेल पढ़ीं हैं बचपन में। पापा के साथ हमेशा हम कवि सम्मेलनों में जाया करते थे तो कविता पढ़ना व सुनना अच्छा लगता था। पापा की एक डायरी थी जिसमें ज़फ़र, शकील बदायूनी, शमीम जयपुरी और भी शायरों की शायरियाँ लिखी थीं। पापा को शेरों-शायरी एवं क़व्वाली का बड़ा शौक़ था ।

पापा की डायरी पढ़कर अपने मन से क़रीब 35-40 शायरियाँ लिखीं। तक़रीबन इतनी ही मेरी कविताएँ भी हैं। 10th -11th में थी तब छत पर पढ़ाई करते हुए बग़ल की छत पर कबूतरों को दाना चुगते देखा मन में ख़्याल आया कविता लिखने का और एक कविता यूँ ही लिख ली शीर्षक दिया *बेबस इंसान *। इसी तरह कई कविताएँ लिखीं। पहले मैंने एकता के नाम से सारी कविताएँ लिखीं हैं, जो आज भी मेरी डायरी में हैं। मुझे गाना सुनना, गाना और लिखना भी अच्छा लगता है। गानों से कई डायरियाँ भरी पड़ी हैं डाँट भी बहुत खाई अपने इस शौक़ के लिए। सन 1992 में 20 वर्ष की थी शादी हो गई। शादी के बाद सन 1992 में ही माँ पर एक लेख लिखा। कुछ कविताएँ संजय जी के लिए लिखीं। आख़िरी कविता मैंने 1993 में अपने बेटे के लिए लिखी जो अब इस दुनियाँ में नहीं हैं। फिर कार्तिक हमारी ज़िंदगी में आया तो लेखन कार्य बंद हो गया। दोनों बच्चों कार्तिक और कावेरी को उच्च शिक्षा देना मेरा उद्देश्य था। मुझे लगता था मैंने पढ़ाई नहीं की पर दोनों बच्चों को अच्छी शिक्षा देना हैं। इसके लिए मुझे काफ़ी संघर्ष भी करना पड़ा। घरवालों के ख़िलाफ़ जाकर दोनों बच्चों को बालाघाट पढ़ने भेजा। सब कुछ आसन नहीं था। पर मैंने किया ।

काफ़ी लम्बे अरसे के *प्रीति ने मुझे दुबारा लिखने के लिए प्रेरित किया ये 4-5 अप्रैल की बात है जब प्रीति ने मुझे अंतरा में जोड़ा और 6 अप्रैल 2017 को मैंने

लिखा *ख़ुशी* पर। संजय जी व बच्चों का भी पूरा सहयोग मिला। *प्रीति व संजय जी की प्रेरणा आज मैंने कई कविताएँ, लघु कथाएँ लेख एवं संस्मरण लिखे। वैसे तो समाजिक कार्यक्रमों में हमेशा बढ़ चढ़ कर भाग लेती आई हूँ और हमेशा सम्मान प्राप्त किया है पर लेखन के क्षेत्र में जो सम्मान मिला उसका सारा श्रेय मेरी प्यारी सखी प्रीति और संजय जी को जाता है क्योंकि दोनों के बिना मुक़ाम हासिल कर पाना असंभव था।

मेरी किताब *जीवनधारा* जिसमें मैंने अपने मनोभावों को अपनी लेखनी के माध्यम से मोतियों की तरह शब्दों में पिरोने का प्रयास किया है ।

अदिति रुसिया
वारासिवनी

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	पृ. क्र.
1.	तर्क	7
2.	अपेक्षा	8
3.	मोह- 1	9
4.	मोह- 2	10-11
5.	मोह- 3	11
6.	नज़रिया- 1	12-13
7.	नजरिया- 2	13
8.	बड़पन्न	14-15
9.	शरणागत	16-17
10.	गूँज	18
11.	प्रेरणा	19
12.	जिद	20
13.	गृहणी	21-22
14.	साक्षात्कार	23
15.	लॉकडाउन	24-25
16.	सोन चिरैय्या	26
17.	शुभागमन- 1	27-28
18.	शुभागमन- 2	29
19.	सतरंगी सपने	30-31
20.	आक्सीजन	32-33

21.	बोनसाई- 1	34-35
22.	बोनसाई- 2	36-37
23.	महत्व	38-39
24.	व्हाट्सएप स्टेट्स	40
25.	प्यारी बड़ी माँ	41-41
26.	जामुन वाला	43-44
27.	आँकलन	45-46
28.	लास्ट सीन	47-48
29.	ब्लैकबोर्ड	48
30.	अंतर्नाद	49-50
31.	अनुभूति	51
32.	ईदी- 1	52-53
33.	ईदी- 2	54
34.	मौन	55-56
35.	क्षतिपूर्ति	57
36.	सावन तीज	58-59
37.	सुख के सैलानी	60
38.	बचत	61-62
39.	लँगड़ा राजा	63
40.	एकांतवास	64-65
41.	विज्ञापन	66
42.	आरोप	67-68

तर्क

पुराने रीति रिवाजों को मानने वाली रिया की सास हमेशा उसे हर बात के लिए टोंकती रहती थी। बावजूद उसके उसने सदा अपनी सास की बातों का मान सम्मान किया करती थी। कभी उनकी बात को काटती नहीं थी। पर हाँ कहीं न कहीं वो इन सब में बदलाव चाहती थी।

ग्यारस को सिर न धोना कहीं नवरात्रि में सिर न धोना, तो कभी कहतीं किसी भी व्रत में यही खाया जाता न जाने कितने नियम क़ानून होते थे उनके। ये सब सुन सुन के रिया थक चुकी थी।

एक बार उसने कहा माँ मेरी तबियत बहुत दिनों से ठीक नहीं चल रही क्या मैं आज व्रत में नमक ले लूँ आजकल तो सभी लोग नमक लेते है। उसका इतना कहना था की दुर्गा देवी आगबबुला हो उठीं। ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने लगी हैं

तुमको जैसा दिखता है तुम वैसा करो। बाहर क्या जाने लगीं घर से ये सब सीख कर आ रहीं है। हमने तो कभी अपनी सास से जवाब सवाल नहीं किए पर ये आज कल की बहुएँ बस अपने मन की करना चाहती हैं। अरे अपने लिए न सही अपने बेटे और पति का ही ख़्याल रख लो जिनके लिए तुम ये व्रत करती हो।

बस चालू होतीं तो बंद ही नहीं होती थीं। उनके पास न बदलने का कोई कारण नहीं होता कोई ठोस तर्क आज तक वो नहीं दे पाई थीं। बस हमारी सास। ए कहा सो हमने किया इतना पता होता था उन्हें। थक कर रिया ने भी बोलना छोड़ दिया।

अपेक्षा

किसी से भी अधिक अपेक्षा कभी कभी कष्टप्रद होती है। लोग सोचते हैं हम अपनों से अपेक्षा नहीं करेंगे तो किससे करेंगे। पर वो ये भूल जाते हैं कि, क्या वो किसी की अपेक्षाओं पे खरे उतरते हैं या बस बड़ी बड़ी बातें कर अकेले ही रह जाते हैं ।ऐसी ही कहानी वीरा की है।

वीरा को दूसरों से बहुत अपेक्षाएँ रहती थीं। खुद किसी के लिए कुछ करें न करे अगर कोई उसके लिए कुछ नहीं करता तो बात करना बंद कर देती। कई बार सहेलियों के बीच भी हँसी का पात्र बनती। कभी घर वालों की उपेक्षा का शिकार होती। उसका स्वभाव ही थोड़ा अलग था समझ के परे ।हमेशा उसका यही रोना रहता आज मेरी नंद ने पूछा, तो कभी भाई भाभी ने नहीं पूछा या फिर मेरी जिठानी ऐसी वैसी, दुनियाँ की बातें पर कभी पलट कर वो यही नहीं सोचती थी कि, क्या कभी वो इन लोगों को पूछती है जो उनसे इतनी अपेक्षाएँ रखती है। खुद तो कभी किसी को पानी के लिए भी नहीं पूछती थी। धीरे धीरे वीरा अपने स्वभाव के कारण अपने रिश्तेदारों से कटती चली गई। अपने परिवार के लोगों से कटती चली गई।

हमेशा उसे सब समझाते थे अपेक्षाएँ बुरी नहीं, पर उतनी करो जितनी अच्छी लगें। अगर तुम किसी से दस की उम्मीद करती हो तो एक बार तो उसके लिए भी कुछ करो। पर तुम चाहती हो लोग तुम्हें हमेशा पूछते रहें पर तुम किसी को नहीं तो सम्बंध इस तरह नहीं निभते ताली दोनों हाथों से बजती है एक हाथ से नहीं आज समय एक हाथ दे दूजे हाथ ले का। उसे किसी की बात कहाँ समझ आने वाली थी। वो अहंकारी थी झुकना तो सिखा ही नहीं परिणाम आज वो अकेली खड़ी थी सारे नाते रिश्तों को तोड़ .....

मोह- 1

रिया हमेशा अपनी चाची को कहती चाची आप क़ितना पुराना सामान जोड़ कर रखती हो। इन्हें कूड़े में फेंक क्यों नहीं देती, या फिर किसी जरूरतमंद को ही दे दिया करो। ऐसा लगता है घर में जैसे पूरे शहर का कबाड़ आपने ही इकट्ठा करके रख लिया। ये सब फ़ालतू की 'मोह' माया है। आख़िर करोगी क्या इन सबका। आप तो दुकान लगा लो मिठाई के डब्बे हों या प्लास्टिक के बैग, डिब्बे डिब्बियाँ, फटे पुराने कपड़े जिन्हें हम फेंक देते है सब चीज़ आपके पास मिलेगी। सच में आपने न पूरे घर को कबाड़ खाना बना रखा है।

जब भी रिया मायके आती चाची से यही सब कहती, वो कहती और रमा सुनती रहती उसे रिया की बातों का न बुरा लगता न कोई असर होता। न ही वो सामान किसी को देती थीं यहाँ तक की बहुओं को भी अधिकार नहीं था कोई सामना किसी को देने का या बिना पूछे अलग करने का। बस एक ही बात कहती तुम्हें क्या पता कब कौन सी चीज़ की ज़रूरत पड़ जाए।

उनका स्वभाव ही ऐसा था कि अगर कोई सामान फेंकने लगता तो वो उसे जोड़ कर रख लेती थीं। उनके सामान के कारण घर बड़ा होने बावजूद हमेशा बिखरा रहता। जगह की कमी उन्हें सदा ही रहती थी। उनके बच्चे उनकी इस आदत से बड़े परेशान था। धीरे धीरे तंग आकर बच्चों ने भी बोलना छोड़ दिया। बस एक रिया ही थी जो उन्हें हर बार टोंका करती थी।पर फिर भी उनमें कोई सुधार न आया।

इस बार तो रिया जब घर आई तो कह कह कर था गई तब उसने भी थक कर एक ही बात बोली.. चाची ऊपर जाओगी तो क्या सब साथ ले जाओगी। थोड़े पुण्य कर्म कर लो उसमें फ़ायदा है घर गृहस्थी बहुओं को सौंप कर जाता पूजा पाठ में मन लगाओ ये सब मोह माया है इनका त्याग करो तभी तुम्हें सद्गति प्राप्त होगी। नहीं तो सारी ज़िंदगी इसी मोहमाया में फँसी रह जाओगी प्राण भी न निकल पाएँगे तुम्हारे। रिया के इतना कहते ही कमरे में हँसी के ठहाके गूंज उठे और रमा जादा न बता हमाई क़िस्मत में जो होगा वही मिलेगा...

मोह- 2

नियति नियति कहाँ हो क्या रही हो तुम, अपने पैरों पर ठीक से तो खड़ी नहीं हो पाती क्या फैला कर बैठ गई हो एक ही साँस में राहुल बाहर से आवाज़ लगाते हुए अंदर आया। कुछ नहीं जी मैं थोड़े ही कर रही हूँ कुछ ये है न हमारी शांता बाई मुझे कहा कुछ करने देती है ये।

ये सब क्या कपड़े क्यों निकाले हैं।

कुछ नहीं मैंने सोचा अभी तो मैं पहन नहीं पाती हूँ जाने और कब तक न पहन पाऊँ या ये भी तो हो सकता है न जी कि मैं इन्हें कभी पहन भी पाऊँगी या नहीं???? इसलिए इनसे मोह कैसा।

तुम ऐसी निराशा भरी बातें क्यों करती हो नियति। जब तक मैं हूँ तुम ऐसा बिल्कुल मत सोचो मुझसे जो बन पड़ेगा मैं अच्छे से अच्छा इलाज कराऊँगा तुम्हारा बस तुम इस तरह की बातें मत किया करो प्लीज़ यार प्लीज़। तुम तो मेरी हिम्मत हो। तुम दूसरों को हमेशा हिम्मत देती हो और आज तुम अपने स्वयं के लिए ऐसा क्यों सोचती हो। अगर तुम हिम्मत हार जाओगी तो मेरा क्या होगा। राहुल बड़े प्यार से नियति को समझा रहा था।

आपके होते हुए कैसी चिंता। आप ही तो मेरा बल हो। आज मैं आपके कारण ही हूँ वरना पता नहीं....

कुछ भी मत बोला करो यार अब चुप भी रहो।

हाँ बाबा ठीक है। मैंने सोचा ये साड़ियाँ अलमारी में पड़ी पड़ी खरब हो जाएँगी तो इन्हें मैं कल्पना, नीतू और हेमा को दे देती हूँ। कुछ साड़ियाँ छोटी को दे दूँगी। कुछ दीदी लोगों को जिसको जो चाहिए वो ले लेंगी। आख़िर पड़ी पड़ी पुरानी ही तो हो रही हैं न। मैं तो कहीं आती जाती नहीं न ही इन्हें पहन पाती हूँ। जब ठीक हो जाऊँगी तो नई साड़ियाँ नई फ़ैशन की के लूँगी इनका क्या मोह कर सेंत कर रखना। दिलाओगे न बोलो। मुस्कुरा कर राहुल से बोली।

हम्म क्यों नहीं सही है से दो।

नियति की दरिया दिली देख सभी ने कहा इतनी सुंदर सुंदर साड़ियाँ क्यों दे रही हो काम आएँगी बाद में। तुम तो ऐसे कर रहो जैसे कभी पहन नहीं पाओगी। साड़ियाँ ही क्यों बहुत सी आर्टीफ़िशियल ज्वेलरी भी रखी है वो ले लो मई तो पहनती नहीं क्या करूँगी इन्हें जोड़ कर जब पहनने लगूँगी तो दूसरी आ जाएगी मोह में जोड़ कर इनका क्या करूँगी देख देख कर बस दिल ही दुखेगा।

इस तरह नियति ने अपना बहुत सा सामान अपनी बहन, नंदों और देवरानी, कुछ बाइयों को दे दिया।उसे किसी चीज़ से मोह नहीं रह गया था। जैसी उसकी हालत थी उसे यही लगता था क्या पता वो कभी ठीक हो पाएगी या नहीं। पर राहुल सदा उसकी हिम्मत बन उसके साथ खड़ा रहा।

मोह- 3

रागिनी की सास को अपने सामान से इतना मोह था कि, वो कभी उसे अपना सामान छूने तो क्या देखने भी नहीं देती थी।

जब कभी मज़ाक़ में वो कहती अम्मा आज नहीं दोगी पहनने तो कब दोगी जब हमारी उमर निकल जाएगी तब? वो हँस कर टाल देती या कभी कहतीं मरने के बाद तो सब तुम्हीं लोगों का है। हम तो छाती पे बाँध के ले जाने वाले नहीं हैं।

उनका ये कहना हमेशा रागिनी को सोच में डाल देता। वो यही सोचती कि क़ितना मोह है अम्मा को अपनी चीज़ों से जब आज इन चीज़ों का समय रहते मैं इस्तेमाल न कर पाई तो मरने के बाद क्या काम की।

ऐसा मोह किस काम का जो कल के लिए सामान संजों के रखा जाए वक्त पे काम न आए.....

नज़रिया- 1

बरसों से अपनी सासु माँ के ताने सुनती आ रही थी सारिका। उसकी सहनशक्ति की पराकाष्ठा अतुलनीय थी। हर बात में ताने हर बात में उसके माता पिता को कोसना बस यही काम था उनका। जब अति हो जाती तो राहुल और उसके बीच झगड़े होते और राहुल यही कहता उनकी उम्र हो गई है।

क्यों सुनती हो उनकी बातें एक कान से सुनकर दूसरे से निकाल दिया करो। पर कभी ये नहीं मानते थे कि माँ की भी कभी कोई गल्ती हो सकती है। सारिका को कोई परेशानी नहीं थी माँ से पर वो चाहती थी कि कभी तो तुम माँ की भी गल्तियाँ देखा करो। बहुत बुरा लगता था उसे।

बच्चे भी अब बड़े हो रहे थे, उन्हें भी बहुत बुरा लगता था अपनी माँ के लिए। सारिका से जब भी बच्चे कुछ कहते वो कह देती दादी बहुत अच्छी हैं बेटा। क्या हुआ अगर वो कुछ कह देती हैं, बड़ी हैं उनसे क्या कबाब सवाल करना। बच्चों को हमेशा अच्छे संस्कार देती। उसे ये समझ आ गया था कि इन सबसे घर में झगड़े ही बढ़ेंगे और स्वास्थ्य पर भी इसका असर पड़ने लगा था।

अब धीरे धीरे सारिका ने अपना माँ के प्रति 'नज़रिया' ही बदल लिया। अब उसे माँ के द्वारा दिए गए ताने परेशान नहीं करते। उन्हें अब वो कुछ कहती तो वो उन्हें समझती कई बार जब वो कुछ कहतीं तो उसे समझ आता कि माँ अपनी तानों भरी बातों में भी कुछ न कुछ सीख दे जाती हैं। उनका स्वभाव उनका व्यवहार चूँकि सारिका के प्रति थोड़ा कठोर था, जिसे वो बदल नहीं सकतीं थी पर अपनी बातों के माध्यम से वो उसे कई बार ऐसी बातें कह जाती जिसमें जीवन के गूढ़ रहस्य छुपे होते थे। इसके पहले उसने इन सबको सिर्फ़ उनकी कठोर वाणी समझा था इसलिए समझ नहीं पाती थी, क्योंकि उसे लगता था कि माँ सिर्फ़ उसे ताने ही देती हैं।

नज़रिया बदला तो सब कुछ अच्छा लगने लगा। माँ की सेवा भी मन लगाकर करने लगी। धीरे धीरे सासु माँ का भी स्वभाव बदलने लगा। घर पर अब शांति थी। एक दिन खाने की में पर राहुल ने बातों बातों में उसे छेड़ ही दिया। क्या बात है सारिका आजकल बहुत मिठास बढ़ रही है, जरा संभल कर न जहाँ मिठास होती है न, वहाँ चींटियाँ जल्दी लगती हैं। उसका इतना कहना था कि, पूरे कमरे में हँसी के ठहाके गूँज उठे।

नजरिया- 2

विनय और उसका परिवार रीत को देखने आए। रीत साँवली सलोनी थी पर तीखे नैन नक़्श थे। बातचीत में भी अच्छी थी। दादी को वो पसंद आ गई थी। रीत को देख कर सभी घर आ गए। सभी का देखने का और सोचने का अपना नज़रिया था सभी ने अपनी अपनी राय दे दी। किसी ने कहा थोड़ी साँवली है, किसी तो किसी ने कहा विनय से कम उन्नीस ही है। किसी ने कुछ।

सबकी बातें दादी सुन रहीं थी। धीरे से कहा तुम सबने अपने अपने नज़रिए से देखा तुम सभी ने उसके तन की सुंदरता देखी, मगर उसके मन की सुंदरता न देख पाए। हमारे विनय के लिए रीत ही सबसे अच्छी है। संस्कारी, मीठा बोलती है, पढ़ी लिखी है। बड़ों का मान सम्मान करने वाली है। हमें ऊपरी सुंदरता से क्या लेना देना। हमारे घर आएगी अच्छा पहनेगी ओढ़ेगी तो वैसे ही निखर जाएगी।

एक बात हमेशा याद रखना बेटा 'तन की सुंदरता काम नहीं आती मन सुंदर और साफ़ होना चाहिए' दादी की सीख बहुत काम की थी सभी ने दादी की बात सुनी और सभी का नज़रिया रीत के प्रति बदल गया। विनय ने भी रीत से शादी के लिए हाँ कर दी।

बड़पन्न

नेहा की कामवाली ने नेहा से- कहा भाभी जी आप अपना राशन लेने जाओगे न तो मेरे लिए कलर वाली मिर्ची ले आना पर ज़्यादा मत लाना इस बार आप आधा किलो ही लेकर आना। और एक दो समान बता दिए लाने के लिए।

नेहा ने हाँ कहा, फिर पूछा इस बार आधा किलो ही क्यों? हर बार तो तू अधिक लेती है।

हाँ भाभी पर इस साल तो इनका धंधा पानी भी नहीं है, थोड़ी बहुत ही कमाई हो रही है। ये बीमारी के कारण तो धंधा ही नहीं चल रहा है। आपने तो पैसे दिए मैं काम पर नहीं आई पर दूसरे आपके जैसा थोड़े ही सोचते हैं।

अच्छा अच्छा ठीक है मैं ला दूँगी।

हफ़्ते भर बाद नेहा ने रामकली से कहा तेरी मिर्ची ले आई हूँ और समान भी ले जाना आज।

कितने की आई भाभी इस बार तो सब सामान महँगा हो गया है। सब चीज़ के भाव बढ़ गए हैं।

नेहा ने अन्दाज़ से क़रीब एक किलो मिर्च थैली से निकाली और उसे दे दी।

- भाभी इतनी नहीं।
- चुपचाप रख ले।
- पैसे नहीं है न भाभी।

तुझसे तो मैंने पैसे माँगे ही नहीं। अभी तो मैं सभी को कुछ न कुछ राशन दे ही रही हूँ तू ये ले जा।

ये नेहा का बड़पन्न था, जो उसने उसे मिर्च दी। क्योंकि इस समय नेहा हर किसी की मदद कर ही रही थी। उसकी एक कमवाली जिसको राशन में मोटा चावल मिल

रहा था उसको भी उसने चावल की कट्टी दी इस तरह वो अपने तरीक़े से सभी की मदद कर रही थी।

कुछ दिनों बाद नेहा ने अपनी बाई को कुछ कपड़े सिलने दिए। कपड़े सिल कर जब रामकली लेकर आई तो नेहा ने पूछा कितने पैसे हुए? नेहा अक्सर उसे अपने छोटे मोटे आलटरेशन के लिए कपड़े दिया करती थी।

- अरे रहने दो भाभी।
- क्यों ????
- नहीं अभी नहीं लेना है। जब ज़रूरत होगी माँग लूँगी।

नेहा को समझते तनिक भी देर न लगी कि ये रामकली का बड़प्पन है जो मैंने उससे मिर्च और कुछ सामान के पैसे नहीं लिए तो वो मुझसे पैसे नहीं लेगी।

शरणागत

अभिलाषा जब भी परेशान होती अपने कान्हा के पास जाकर बैठ जाती। अपने दुःख दर्द सब कुछ उन्ही से साझा करती थी। करती भी क्यों न उसे घर पर हमेशा सभी झिड़कियाँ और ताना देते थे। उसकी बात सुनने वाला कोई था भी तो नहीं। कभी किसी ने प्यार के दो बोल भी न बोले होंगे उससे। रमेश से अगर कभी अपने मन की बात कहना चाहती तो बस एक ही बात कहते, अब तुम चालू मत हो जाना मेरे पास तुम्हारी फ़िज़ूल की बातें सुनने का वक्त नहीं। तुम्हें तो मेरे माता पिता से हमेशा शिकायत ही रहती है।

आज तो हद हो गई बड़ी ननद क्या आई माता जी ने तो पूरा घर ही सर पर उठा लिया। बहू ये बनाओ वो बनाओ, अरे!! तुमने अभी तक खीर नहीं बनाई... तुमसे कहा था न सब उसकी पसंद का ही खाना बनाना। तुमसे तो एक भी काम नहीं होता। अरे सुनो!! कचौरी भी बना लेना, और हाँ...

सुबह से चकरी की तरह चलते चलते थक गई थी, एक मिनिट के लिए भी नहीं बैठी। सोचा थोड़ा आराम कर लूँ पर। । मेरे नसीब में कहाँ। बाहर से फिर आवाज़ आ गई। बहू मीरा आ गई! पानी वानी ले आओ ज़रा। चाय नाश्ता के आओ। बस एक साँस में कहे जा रही थी।

दीदी कुछ घंटों के लिए आई थीं पर उनका आना हमेशा कष्ट प्रद ही होता था। वो तो माता जी से भी दस कदम आगे थी। माता जी और बाबूजी उन्ही की सुनते थे। आते बराबर ही तानों की बौछार शुरु ये क्या भाभी तुम तो माँ बाबूजी का ख़याल ही नहीं रखती हो देखो तो जरा माँ की क्या हालत हो गई कितने सूजे हैं पैर और बाबूजी को देखो कैसे दुबले होते जा रहे हैं खाना पीना ठीक से नहीं खिला पा रहीं तो बता दो हमी ले जाएँगे कर लेंगे सेवा...

मन तो किया दो टूक जवाब दे दूँ पर मैं नहीं चाहती थी की ज़बरदस्ती की बहस हो, पर वो थीं कि चुप ही नहीं हो रही थी। ऊपर से माता जी भी शुरु हो गईं। उसी समय रमेश का आना हुआ।

कैसी हो दीदी ?? इस बार बड़े दिनों बाद आना हुआ। हाँ क्या करूँ यहाँ आती हूँ तो माँ बाबूजी की ये दयनीय हालत देखी भी नहीं जाती। रमेश को मेरे ख़िलाफ़ भड़काने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी थी दीदी ने। अपनी बुराई किसे पसंद आती वो भी तब जब हम किसी के लिए समर्पित भाव से सेवा करें और गेम बदले में अपमान मिले।

बहुत तेज रोना आ रहा था। क्या करूँ कुछ समझ नहीं आया। बस ऐसे में मेरे एक ही सहारा होते हैं मेरे कान्हा। उनकी शरण में ही मुझे शांति मिलती है। मन बहुत व्याकुल था।

कान्हा आज मुझे कुछ नहीं चाहिए। कहते हैं न जो भी तुम्हारी शरण में आता है तुम अपने 'शरणागत' को कभी ख़ाली नहीं लौटाते बस कान्हा आज मेरी भी एक विनती हैं आख़िर जब तक मैं सबकी सुनूँगी कब तक?? बोलो न मैं सब कुछ हँस कर सह जाऊँगी बस कभी तो रमेश मेरे साथ खड़े रह मेरा पक्ष भी सुनें। मुझे कुछ नहीं चाहिए बस इनका साथ चाहिए। तभी कमरे से रमेश का स्वर अभिलाषा के कानों में पड़ा..

दीदी क्यों ज़हर घोलती हो तुम हर बार आकर माँ बाबूजी के कानों में। मैं कभी कुछ कहता नहीं इसका मतलब ये नहीं कि मुझे कुछ समझता नहीं। मेरी अभिलाषा इतनी भी बुरी नहीं जितना आपने उसे बना दिया। मैं उसकी बातें कभी सुनता नहीं पर इसका मतलब ये भी नहीं कि उसे समझता नहीं। मैं नहीं चाहता कि घर में रोज़ रोज़ किल किल हो बस इसीलिए उसे हमेशा चुप कर देता हूँ। पर अब बस दीदी उसका भी स्वाभिमान है अब मैं उसका और अपमान बर्दाश्त नहीं कर सकता। आप उसके लिए अच्छा नहीं बोल सकती तो बुरा भी मत बोलिए।

ये सारी बातें सुनकर अभिलाषा की आँखों से अश्रु रुक ही नहीं रहे थे। कान्हा का बार बार धन्यवाद कर रही थी। बस एक ही बात कह रही थी सच कहते लोग कान्हा तुम अपने शरणागत को अपने गले लगाते हो उसे कभी मायूस नहीं करते।

गूँज

माँ... माँ... अरे काहे चिल्ला रहे हो! दिनभर लड़ाई दिन भर लड़ाई। थक गए हैं हम तो, अब तुम लोगों की रोज़ रोज़ की लड़ाई से। अभी तुम्हारे बाबू जी को तो आने दो, सब बात बताएँगे उनको हम। बहुत परेशान कर दिया है, तुम दोनों ने। चिट्ठी आई थी बाबूजी जी की वो जल्दी आने वाले हैं। उनकी छुट्टी मंज़ूर हो गई है। रमा एक साँस में सब कहे का रही थी, और काम करती जा रही थी। उसे निलेश के आने की तैयारी जो करनी थी। बस उसी के इंतज़ार में उसकी पसंद की चीजें बनाने में लगी थी।

बाहर से फिर आवाज़ आई पर अब उस आवाज़ में उसे रुदन सुनाई दिया। कपिल और तान्या माँ माँ करते हुए रमा से दौड़ कर चिपक गए और ज़ोर ज़ोर से रोने लगे। रमा घबरा गई क्या हुआ कुछ बोलते क्यों नहीं?? क्यों तो तो रहे हो, कहती हुई बाहर आई तो सिपाही ने कहा निलेश सर अब इस दुनियाँ में नहीं रहे। देश की ख़ातिर उन्होंने हँसते हँसते अपने प्राण न्यौछवर कर दिए।मिटाना सुनते ही सारे कमरे में सन्नाटा छा गया। और थोड़ी ही देर में रमा की आवाज़ पूरे कमरे में गूंज उठी नहीं वो तो हमसे मिलने आने वाले थे। इस बार उन्होंने हमसे वादा किया था ,वो ज़रूर आएँगे। सन्नाटे को चीरते हुए रमा का विलाप सारे कमरे में गूँज उठा।

प्रेरणा

बात उन दिनों की है जब मीरा की तबियत बहुत खराब थी। लम्बे समय तक बिस्तर पर पड़े रहने के कारण थोड़ा डिप्रेशन में आ गई थी। काफ़ी प्रयासों के बाद भी उसके स्वास्थ में कोई सुधार नहीं हो रहा था। बिस्तर में पड़े पड़े सोचती क्या होगा मेरा, कैसे जी पाऊँगी मैं इस तरह की ज़िंदगी, इन तकलीफ़ों से तो अच्छा है कि मुझे ईश्वर मौत दे दे। फिर अपने बच्चों को देख जीने की चाह जाग उठती। दर्द सहती रोती रहती। मीरा के पति पंकज दिन-रात उसकी सेवा करते। बहुत ध्यान रखते थे।

एक दिन आख़िर वो दिन भी आ गया जब मीरा की बीमारी का मिल गया। पूना जाकर उसका ऑपरेशन होना तय हो गया। ऑपरेशान के लिए सब पूना चले गए। जाते जाते उससे मिलने उसकी चाची सास आईं उन्हें देख कर उनसे बात कर के मीरा को बहुत हिम्मत मिलती थी, क्योंकि उन चाची जी के साथ बहुत बुरा हादसा हुआ था। जिसमें उन्हें बहुत चोट लगी थी। फिर भी उन्होंने हिम्मत नहीं हारी थी। ऑपरेशन सफल रहा फिजीयो थेरेपी शुरु हुई। असहनीय दर्द होता पर बस उसके कानों में चाची के शब्द गूंजते जितना दर्द सहोगी उतनी ही जल्दी ठीक होगी।

वो शब्द उसे दर्द सहने प्रेरित करते और वो सहती जाती आँखों से आसूँ बहते पर मुँह से उफ़्फ़ नहीं निकालती थी। जब उसे चलाया गया तो ऐसे चली जैसे उसके पँख लग गए और वो उड़ चली। भले ही उसका आत्मविश्वास उसके साथ था, उसमें जीने की जिजीविषा थी, पर चाची को देख उसे प्रेरणा मिलती थी, कि इस उम्र में जब वो ठीक हो सकती हैं तो मैंने तो ज़िंदगी जी ही नहीं। अपने पति पंकज को देख प्रेरणा मिलती थी हिम्मत कभी न हारने की। बच्चों का मासूम चेहरा उसे जीने के लिए प्रेरित करता था।

आज मीरा सकुशल जीवन व्यतीत कर रही है। अपने बहू बेटों के साथ। पंकज जैसा पति पा वो धन्य है, क्योंकि उसके जैसा पति जिसने कठिनाइयों में भी उसका साथ निभाया कभी एक पल के लिए भी अकेला नहीं छोडा।

जिद

समर और राधिका की ज़िंदगी बड़ी अच्छी तरह से चल रही थी। राधिका थोड़ी ज़िद्दी थी, पर फिर भी समर उसे हमेशा समझा बुझा कर शांत कर ही देता था। समर के तीन भाई और थे सभी एक साथ रहते थे। राधिका के ज़िद्दी स्वभाव के कारण कई बार घर पर झगड़े होते कहासुनी होती पर हर बार उसे सभी माफ़ करते जाते, पर आख़िर कब तक यह चलता ??

एक दिन राधिका ने जिद ही पकड़ ली उसे इन सबसे अलग होना ही है। वो सबके साथ नहीं रहना चाहती, नहीं तो मायके जाने की धमकी! सभी काफ़ी समय से उसे बर्दाश्त कर रहे थे। ये समर अच्छे से जानता था। रोज़ रोज़ की किटकिट से तंग आ उसने भी फ़ैसला ले लिया। राधिका तुम अलग होना चाहती हो न तो ठीक है हम अलग हो जाएँगे। अपने भाइयों से समर इतना प्रेम करता था कि, अलग होने की बात से ही उसे बहुत कष्ट होता था, पर आज राधिका की 'जिद' ने उसे अपने परिवार से अलग कर ही दिया। भाइयों ने जाते जाते समर से बस इतना कहा, समर हम अलग हो रहे हैं तो क्या हुआ हमारा प्यार कभी कम नहीं होगा।

बेमन से अलग होने का परिणाम यह हुआ कि समर गुमसम रहने लगा। राधिका को आज़ादी चाहिए थी वो उसे मिल गई। अपनी जिद के आगे उसे समर की तकलीफ़ दिखाई ही नहीं दे रही थी। धीरे-धीरे समर अंदर ही अंदर घुट रहा था। उधर भाई भाभी को भी समर की चिंता सताती थी। न जाने ऐसा क्या था जो राधिका उन सबसे कटती जा रही थी। उसके इस इसी व्यवहार के कारण किसी की हिम्मत नहीं होती थी कि वो समर के घर जाएँ। बस बाहर ही मुलाक़ात करते थे। एक दिन अचानक समर की तबियत बहुत ख़राब हो गई। समर अपने भाइयों को याद करता रहा पर राधिका ने नहीं बुलाया। समर अस्पताल में भर्ती हुआ उसने राधिका सेवन ही बात बोली राधिका तुमने मुझे मेरे भाइयों से तो अलग कर दिया, पर मेरे मन से उन्हें कभी नहीं निकाल पाओगी कभी नहीं...

गृहणी

मम्मा मम्मा बैठ जाओ न यार आप थोड़ी देर, थकती नहीं हो क्या कहती हुई रिया रसोई में आई। अपनी सास को डाँट कर कहा मम्मा अब आप बैठ जाओ न यार, क़ितना काम करती हो आप वैसे ही आपको कितनी तकलीफ़ है। हाथ अलग सज रखे हैं आपके, पैरों ने भी दर्द है। सब काम हो जाएँगे हम कर लेंगे बस आप रसोई से जाओ।

मुझे कुछ नहीं हुआ बेटा हो जाएगा काम मुझे पता है। अगर रसोई में हम काम नहीं करेंगे तो कौन करेगा। एक कुशल 'गृहणी' वही होती है जो हर काम कर सके। उसका कर्तव्य है कि वो सबका ख़याल रखे।

हाँ तो आप रखती हो न सबका ख़याल! नहीं रखती हो बस अपना नहीं रखती। मुझे भी काम नहीं करने देती बस अकेली ही खुद करती रहती हो। ये भी बना लें वो भी बना ले आपका मन ही नहीं मानता। सबकी पसंद का ख़याल रहता है आपको। कभी थोड़ा सा आराम भी किया करो न।

रिया तुम अभी छोटी हो मैं तुम्हारे ऊपर इतनी जिम्मेदारियाँ नहीं छोड़ सकती। क्या करूँ माँ हूँ न इसीलिए डरती हूँ। क्या हुआ तुम बहू हो पर हो तो रिदीमा के जैसे ही मेरी बेटी। जैसे मुझे उसकी फ़िक्र रहती है वैसे ही तुम्हारी भी।

अगर आप मुझे करने नहीं दोगी कोई काम तो मैं कैसे करूँगी मम्मा।

अभी देखा करो बग़ल में खड़े होकर धीरे-धीरे सब सीख जाओगी।

कुछ ही महीने में रिया रसोई के कामों में दक्ष हो गई। कामिनी ने रिया को अपनी ही तरह रसोई के हर काम सिखा दिए। रिया को अपनी फ़िक्र करते देख कामिनी की बड़ी ख़ुशी मिलती। क्योंकि आजकल की पढ़ी लिखी लड़कियों को अपने अलावा किसी दूसरे की फ़िक्र नहीं होती। रिया बहुत ही समझदार और

संसकारी है। बोली में मिठास, अपनत्व की भावना उसकी पहचान। बहुत कम समय में उसने सबके दिलों को जीत लिया।

कामिनी आँख बंद कर सोच रही थी। रिया कितनी मासूम है। ईश्वर सदा ही उसे ऐसे ही बनाए रखे। सबसे वो ऐसे ही प्रेम करती रहे। जल्द ही वो दिन आएगा जब रिया मेरी ही तरह कुशल 'गृहणी' बन सबकी पसंद ना पसंद का ख़याल रखेगी। जैसे मैंने सारे रिश्ते नाते निभाए हैं वैसे ही रिया सबका माँ सम्मान कर सब कुछ बखूबी निभा लेगी। मम्मा कहाँ खो गाईं आप?? एक लम्बी सास कामिनी ने ली कुछ नहीं बेटा। आज क्या खाना है जल्दी बताओ कह फिर अपने काम में जुट गई....

साक्षात्कार

अनुश्री को जबसे गुरु का सानिध्य प्राप्त हुआ, तब से उसे स्वयं को पहचानने की जिज्ञासा भी बढ़ने लगी थी। उसकी इस जिज्ञासा को देख गुरु ने उसे ध्यान करने की प्रेरणा दो। अपने गुरु की प्रेरणा पा अनुश्री निरंतर ध्यान में आगे बढ़ने लगी।

गुरु ने उससे कहा ऐसा क्या जो तुम पर अधिक हावी होता है। अनुश्री ने कहा गुरु देव मेरा ग़ुस्सा मुझ पर अधिक हावी होता।

तो सबसे पहले अपने अंदर के क्रोध को दूर करो।

अब जब वो ध्यान में बैठती प्राण करके बैठती। धीरे धीरे उसका ग़ुस्सा जाता रहा। उसकी आकांक्षाएँ बढ़ती जा रही रहीं थीं। अनुश्री जिज्ञासु थी इसलिए उसने एक दिन अपने गुरु से कहा....

हर गुरुवार मैं स्वयं को कैसे पहचानूँ।

गुरुवार ने कहा तुम गहरे ध्यान में बैठ कर शांत चित्त से बैठ जाओ। स्वयं को जानने का प्रयास करो।

कुछ दिनों तक निरंतर ध्यान से अनुश्री का स्वयं से 'साक्षात्कार' हुआ। उसकी मेहनत रंग लाई। मन को एकाग्र करने में उसे कुछ कठिनाइयाँ ज़रूर हुईं पर, वो कामयाब रही।

एक अच्छे गुरु का सानिध्य पा उसकी ज़िंदगी ही बदल गई। हमेशा ग़ुस्सा करने वाली, छोटी छोटी बातों में खीझ जाने वाली अनुश्री अब शांत स्वभाव की, सबके दिलों पर राज करने वाली अनु दीदी बन गई।

लॉकडाउन

रिया और कल्पना आपस में बात कर रही थीं। इस लॉकडाउन ने क़ितना कुछ सिखा दिया न रिया लोगों को।

हाँ सच में कल्पना देखो न इन्होंने कभी एक गिलास पानी भी उठा कर नहीं पिया था,पर लॉकडाउन में मैंने सोचा नहीं था जितना इन्होंने काम किया।

सच में यार इसके भी अपने मज़े थे, जल्दी जल्दी काम निपटा कर सभी एक साथ बैठते थे। सारे इनडोर गेम जो कभी हमने खेले थे। पूरा परिवार एक्ट्ठे बैठ खेलता था।

दिन भर साथ काम करना परिवार का प्यारा सा साथ सबको एकता के सूत्र में बाँध गया ये।

हम्म! देखो न वो बग़ल वाली शर्मा भाभी का बेटा जो सालों से बाहर था दिवाली के दिवाली दो दिन के लिए ही घर आता था। क़ितना ताड़ो जाती थीं कभी कभी वो अपने बेटे की याद में आज वो इस लॉकडाउन की वजह से सालों बाद अपने माता पिता के साथ रह पा रहा है।

हाँ कल्पना तुम सही कह रही हो कोरोना की वजह से सभी अपनों से मिल पाए जितने बच्चे बाहर थे सभी के बच्चे घर लौट आए। घर से ही काम करते हैं और परिवार के साथ रह पा रहे है।

हाँ न वही तो बच्चों को दादा दादी, नाना नानी का प्यार मिल रहा है। बच्चे बड़े बुज़ुर्गों के साथ रह कर उनके सानिध्य में बहुत कुछ सीख पा रहे हैं। वरना आजकल तो सभी एकल परिवार पसंद करते हैं पर सभी जगह बंद के चक्कर में बच्चों ने सामूहिक परिवार में रहना सीखा।

अरे क्या बात चल रही है तुम दोनों की, आज बड़ी फ़ुरसत में हो भाभी। प्रियंका ने पीछे से आवाज़ लगाई।

अरे नहीं प्रियंका बस ऐसे ही लॉकडाउन की बातें चल रही हैं। कहीं फिर से न लग जाए।

अरे वो तो लगना ही है भाभी कोरोना भी तो फिर से बढ़ रहा है। कई जगह तो लग गया है। अभी भी जनता नहीं सुधरी तो लगना निश्चित है।

अपनी सोसाइटी तो बहुत अच्छी है हम सब तो मास्क का उपयोग करते ही हैं। पर जनता पता नहीं क्यों नहीं समझ पा रही कि मास्क से उनकी ही सुरक्षा है नुक़सान नहीं।

चलो आप लोगों को तो काम नहीं पर गुप्ता जी के आने वक्त हो गया में तो चलती हूँ...

चलो बाय बाय अब हम भी चलते हैं...

सोन चिरैय्या

अरे ऐ बहुरिया अपनी बिटिया को जरा सम्भाल के राखो नाहीं तो हाथ से निकल गई न तो बहुतै परेशानी होई। लाख बार समझा चुके हैं तोहरी बिटिया मानती नहीं है।

अब क्या हुआ अम्मा। आप तो न बस पीछे ही पड़ गई हो पिहु बिटिया के। अभियई तो खेलने खाने के दिन है ससुराल जाए के तो बाँध जाएगी बँधन में।

वही तो समझा रहे हैं हम तुमको। शादी होने वाली है अभी भी न सुधरी तो नाक कटाई हमार ससुराल में जाईके देखती रही तुम।

अरे अम्मा सब सिख जाएगी जब जवाबदारी सर पे आएगी। पढ़ी लिखी है सब सँभाल लेई चिंता न करो।अभी तो डाँटती हो न अम्मा जब हमार 'सोन चिरैय्या' ये बसेरा छोड़ उड़ जाई न तो सबसे ज़्यादा आसूँ न आप ही बहाओगी।

रुँधे गले से अम्मा बोली... हम्म ये तुम सही कह रही हो बहुरिया कलेजे में पत्थर रख बिदा क़रीब हम अपनी चिरैय्या को। सबसे लाड़ली जो है। आज इहाँ चहकती रहती है हमार आंगनवा सुना कर कल दूसरे के आंगनवा में चहकेगी।

शुभागमन- 1

रमेश का पूरे शहर में नाम था। अच्छा व्यवसाय अच्छा रुतबा था। सारा शहर उनका सम्मान करता था। उनकी पत्नी रमा एंजीयो चलाती थीं। इतने बड़े घर की होने के बावजूद उन्हें जरा भी घमंड नहीं था। हर किसी के साथ उठना बैठना, सभी से हँस कर बातें करना चाहे कोई अमीर हो या गरीब उनकी नज़र में कोई बड़ा छोटा नहीं था। वे सभी को समान भाव से देखती थीं।

एक दिन वो अपने एंजीयो के काम से किसी गाँव में गईं थीं जहां उनकी मुलाक़ात हेमा से हुई। वहाँ उन्हें पता चला हेमा के माता पिता का देहांत हो गया है और वो इसी गाँव में गाँव की महिलाओं को निःशुल्क प्रशिक्षण देती है। साथ ही सरकारी स्कूल में शिक्षिका है। हेमा से मिलकर रमा बहुत प्रभावित हुई। इतनी सी उम्र में इतनी समझदार और संस्कारी लड़की उनका मन मोह लिया था हेमा ने।

घर आकर रमा ने रमेश को हेमा के बारे में बताया। रमेश ने कहा आप कहना क्या चाहती हैं मुझे जरा ठीक से बताईए। रमा ने कहा मैं चाहती हूँ कि हम आपके बेटे नितिन का विवाह उसके साथ कर दें। हेमा बहुत सुलझी हुई समझदार लड़की है।

तुम एक मुलाक़ात में कैसे ऐसा निर्णय ले सकती हो। अभी तुम उसे जानती ही क़ितना हो। फिर उसके माता पिता भी नहीं हैं। पहले पूरी जानकारी तो के लो।

ठीक है आप कहते हैं तो मैं पहले उससे दो चार बार मिल लेती हूँ पर यक़ीन मानिए नितिन भी उसे मना नहीं कर पाएगा।

रमेश ने रना से सारी जानकारी तो ले ही की थी। उनके मन में विचार आया रमा जब इतना कह रही हैं तो क्यों न उस लड़की से मुलाक़ात की जाए। वो आज़ाद ख़यालों के थे इसीलिए अपने बेटे नितिन को लेकर उस गाँव गए। वहाँ जब उन्होंने हेमा से बातचीत की तो उनकी सोच ही बदल गई। नितिन से पूछा तुम्हें ये लड़की

कैसी लगी। मैं चाहता हूँ कि टीम एक बार इसके बारे में ज़रूर विचार करो। पर अपनी माँ से इस विषय में अभी चर्चा नहीं करना।

नितिन ने एक दो बार हेमा से मुलाक़ात की फिर फ़ोन पर भी बातचीत की। उसे हेमा पसंद आ गई। उसने अपने पिता को अपना जवाब बता दिया। कुछ ही दिनों में रमेश ने कहा रमा क्या बात है तुम्हें नितिन की शादी की तैयारी नहीं करना क्या अरे तैयारियाँ शुरू करो। अपने घर हेमा बहू का शुभागमन जो होने वाला है। रमा की ख़ुशी का ठिकाना न रहा वो ज़ोर शोर से हेमा के शुभागमन की तैयारियों में जुट गई ।

शुभागमन- 2

आर्या को लेबर पेन शुरु हो चुका था। रिया उसे लेकर अस्पताल गई वहाँ उसे एडमिट कर लिया गया। चार पाँच घंटों के इंतज़ार के बाद उसे नर्स ने ख़ुशख़बरी दी बधाई हो आँटी नवरात्रि के पहले ही आपके घर माता रानी का 'शुभागमन' हो गया है।

रिया की ख़ुशी का ठिकाना नहीं था वो अपने घर लक्ष्मी के आगमन से बहुत खुश थी। उसके घर में सालों बाद लड़की का जन्म हुआ था। उसके उसने नर्स के हाथों से बेटी को लेते हुए कहा के शुभ दिन पर लक्ष्मी का शुभागमन हुआ है सिस्टर। बेटियाँ बड़े नसीब वालों के घर जन्म लेती हैं।नर्स ने पलट कर कहा आपकी सोच बहुत अच्छी है आँटी वर्ना आजकल तो लोग बेटे की चाहत रखते हैं। बेटे की चाहत में उन्हें बहू के दुःख दर्द का ख़याल नहीं होता उन्हें तो बस बेटा चाहिए होता है। अभी कल ही एक पेशेंट को बेटी हुई, पहले भी उसकी दो बेटियाँ हैं पर बेटे की चाहत में उसने एक और लड़की को जन्म दिया। उसकी सास ने न जाने उसे क्या क्या बातें सुना दीं उन्हें न तो उसके दर्द का एहसास था न ही उसकी भावनाओं का ख़याल।

रिया अपनी गोद में बेटी को लिए हुए सोच रही थी कि आज के समय में भी ऐसे लोग हैं जो बेटे को अधिक महत्व देते हैं एक बेटे की चाहत में अपनी बहू को प्रताड़ित करते हैं उसकी भावनाओं के खेलते हैं। अब तो समय बदल चुका है लड़का लड़की का भेद जाने कब मिटेगा और कब लड़कियों को हृदय से स्वीकार कर पाएँगे लोग।

सतरंगी सपने

अरे ओ छमिया का कर रही है रे तू। दिनभर कापी पुस्तक में घुसी रहती है जैसे पढ़ लिख कर कोई कलेक्टर बनना है का तोहे।

अरे कहे पिछे पड़े राहते हो छमिया के छमिया के बाबू।

तोहे बड़ा बुरा लगता है। अरे कुछ काम धाम सिखाओ जिसमें सार है। जाना तो दूसरे के घर ही है न।

बाबू हमका तो पढ़ना है ख़ूब पढ़ना है। कलेक्टर बने चाहे न बने पर हाँ कुछ तो बनना है। आप देखना एक दिन आपकी छमिया बहुत नाम कमाएगी। तब हमें छमिया नहीं हमारे असली नाम से पुकारोगे रेवा हम्म। हँस कर छमिया अंदर चली गई।

उसे तो पढ़ने की धुन थी पढ़ लिख कर कुछ बनना था चाहती थी। उसकी आँखों में सतरंगी सपने थे। वो चाहती थी कि गाँव की सभी लड़कियाँ उसकी तरह ख़ूब पढ़े लिखें दकियानूसी विचारधाराओं से बाहर आएँ।

इस साल छमिया ने दसवीं की परीक्षा पास की वो भी अव्वल नम्बर से। उसे स्कालरशिप मिली। उसे पुरस्कार देने गाँव के मुखिया आए साथ में उनकी बेटी रीता जो शहर से आई थी वो भी आई। उसने रेवा (छमिया) से ढेर सारी बातें की बातों बातों में रेवा ने बताया वो ख़ूब पढ़ना लिखना चाहती है और गाँव की लड़कियों और महिलाओं को भी पढ़ाना चाहती है। उसका सपना है कि सभी महिलाएँ पढ़ लिख कर शिक्षित बन जाएँ।

रीता ने कहा तुम जो चाहती हो वो अवश्य ही पूरा होगा अब ये केवल तुम्हारा ही नहीं मेरा भी सपना है कि जिस गाँव में तुम्हारे जैसी होनहार बेटियाँ हैं वो आगे बढ़ें। तुम्हारे इस नेक काम में मैं तुम्हारे साथ हूँ। तुम आगे की पढ़ाई मन लगा कर करो।

अरे दीदी आप इसे जितना आसान समझती हैं उतना है नहीं। हमारे गाँव में लड़कियों को पढ़ने लिखने नहीं दिया जाता। हमारे बापू भी हमारी शादी करना चाहते हैं पर माँ की जिद है इसलिए मैं पढ़ पा रही हूँ।

तुम चिंता मत करो अभी तुम अपनी पढ़ाई पर ध्यान दो। धीरे-धीरे दो साल बीत गए। रीता ने अपने पिता के साथ मिलकर गाँव में अच्छी शिक्षा का प्रबंध कराया। लोगों में पढ़ाई के प्रति जागरुकता लाई। कुछ हद तक कामयाब भी रही। बारहवीं के बाद रीता रेवा को लेकर शहर चली गई जहाँ उसका दाख़िला उसने एक अच्छे कॉलेज में करवाया। रेवा मन लगाकर पढ़ती रही। वहाँ भी रेवा ने अव्वल नम्बर से अपनी पढ़ाई पूरी की। पढ़ाई पूरी होते ही उसकी नियुक्ति शहर के स्कूल में हो गई। रीता के साथ मिलकर रेवा ने अपने सपने को साकार करने की बात कही रीता ने भी उसे हामी भर दी। दोनों गाँव आइ दोनों ने मिलके गाँव में रात्रि स्कूल खोला जिसमें सभी गाँव की महिलाएँ पढ़ाई करने आ सकें। लोगों को पढ़ाई के प्रति जागरुक किया। सबसे पहले रेवा ने अपनी माँ और काकी को स्कूल में दाख़िला दिलवाया। उन्हें देख धीरे धीरे गाँव की अन्य महिलाएँ भी आने लगी।

उन्होंने समझाया कि अगर आप पढ़ लिख लोगी तो आपके लिए ही अच्छा है। कभी कोई आपके साथ ठगी नहीं करेगा, मुश्किल आने पर आप खुद इतनी समर्थ होगी कि अपने कार्य खुद कर पाओगी। आपको किसी पे आश्रित नहीं रहना पड़ेगा।

गाँव के पुरुषों को भी समझाना कहाँ आसान था पर दोनों ने मिलकर कर दिखाया । एक दूसरे की देखा सीखी बहुत सी महिलाएँ स्कूल आने लगीं। कुछ बूढ़ी काकियों ने तो बुरा भला भी कहा छमिया को पर अंत में वो भी ख़ुशी ख़ुशी आने तैयार हो गई।

ये सब देख रेवा ने रीता से कहा, दीदी मेरा सपना आपके बिना अधूरा रहता। आपने मेरे सतरंगी सपनों को साकार कर दिया। मेरे गाँव की महिलाएँ अब किसी पर निर्भर नहीं होंगी।

उधर छमिया के बाबू का भी ख़ुशी से ठिकाना नहीं था। अरे ओ रेवा बिटिया कहाँ हो जल्दी आओ। गाँव के मुखिया ने कल तुम्हें बुलाया है कोई पुरस्कार देने वाले हैं तुम्हें। रेवा ने कहा देखा बाबू मैं न कहती थी एक दिन आप मुझे छमिया नहीं रेवा कह कर पुकारोगे.....

आक्सीजन

माँ माँ सब कहते हैं दादा अब लौट कर नहीं आएँगे, दादी और पापा भी! बताओ न माँ दादा-दादी और पापा कहाँ चले गए? आप तो कहतीं थीं शहर के अस्पताल में भर्ती हैं, जल्दी आ जाएँगे आप रो क्यों रही हो माँ कुछ तो बोलो, बोलो न माँ!

अपने दस वर्षीय बेटे राहुल के प्रश्नों के जवाब नहीं थे प्रियंका के पास। राहुल ने प्रश्नों की बौछार जो कर दी थी। उसे कैसे बताए कि अब वो कभी लौट के नहीं आएँगे। रोते-रोते उसने राहुल को गले से लगा लिया और फूट-फूट कर तो पड़ी। हाँ बेटा अब कभी नहीं आएँगे कभी नहीं... सारे कमरे में सिसकियाँ गूंज उठी। तभी नितिन और रानी ने रोते हुए अंदर प्रवेश किया ये क्या हो गया भाभी, सब हमारे ही साथ होना था। भाभी सम्भालो अपने आपको अभी तो राहुल को सम्भालना है आप कमजोर हो जाओगी तो हम सब क्या होगा भाभी।

अभी राहुल का मन शांत नहीं हुआ था। पूरी रात वो रोता रहा। अपने दादा दादी के बिना वो रहता ही नहीं था और साथ ही पापा का भी ऐसे अचानक जाना उसके मन को झकझोर रहा था। सुबकते सुबकते सुबह हो गई। उठते ही फिर सवालों की झड़ी शुरू हो गई। चाचा बताओ न पापा तो इतने बड़े शहर में लेकर गए थे दादा दादी को वो खुद भी लौट कर नहीं आए। क्यों चाचा क्यों??? नितिन उसे समझा रहा था बेटा तुम्हारे पापा और दादा दादी को आक्सीजन की कमी हो गई थी इसलिए उन्हें शहर के बड़े अस्पताल में भर्ती करना पड़ा उनका आक्सीजन लेबल काम हो रहा था। उन्हें आक्सीजन देने के बाद भी उन्हें पर्याप्त मात्रा में आक्सीजन नहीं मिल पा रही थी इसलिए उनकी साँसें थम गई और वो भगवान के घर चले गए।

चाचा हमें तो आक्सीजन पेड़ों से मिलती है न और दादा ने तो हमेशा पेड़ों की सेवा की है दादा ने पूरे गाँव में वृक्ष लगाए फिर भी दादा की जान आक्सीजन न मिलने की वजह से गई ऐसा कैसे हो सकता है चाचा बताओ न। राहुल के सवालों का जवाब किसी के पास नहीं था। ये तो होनी जो होकर रही। प्रियंका ने बस इतना कहा तुम नहीं समझोगे राहुल तुम अभी बहुत छोटे हो। अपने मन को पत्थर सा कर समझाया बेटा इनका साथ बस इतने ही दिनों का था। दादा पापा और दादी बहुत अच्छे थे न भगवान अच्छे लोगों को जल्दी अपने पास बुला लेते हैं इतना कहते ही फिर रानी से लिपट कर रोने लगी शायद वो राहुल के साथ साथ अपने मन को भी दिलासा दे रही।

बोनसाई- 1

अनु ने अपनी नई बहू रिया का स्वागत बड़े ही धूम धाम से किया उसने जरा भी लगने नहीं दिया कि शादी लॉकडाउन में हुई है। सभी नेंग चार हर काम ख़ूब अच्छे से किया। बड़ा परिवार था सामूहिक परिवार होने के कारण बच्चे बड़े सभी थे घर पर। सभी का स्वभाव अलग अलग था। बुजुर्ग भी थे तो थोड़े बँधन भी थे परिवार में। शादी तो अनु ने जैसे तैसे कर की थी लड़की दूसरे समाज में की थी इसलिए उसे डर भी था पता नहीं कैसे सब कुछ ठीक हो पाएगा क्योंकि उसकी दादी सासु माँ इन सब के ख़िलाफ़ थी बावजूद इसके अनु ने अपने बेटे की ख़ुशी के लिए ये निर्णय ले ही लिया था।

अनु ने सब कार्यक्रमों से फ़ुरसत होते ही रिया को अपने पास बिठाया और बड़े प्रेम से समझाना शुरु किया घर के सभी सदस्यों के बारे में बताने लगी। उसने कहा रिया तुम्हें 'बोनसाई' बनना है जैसे बोनसाई का पेड़ होता तो छोटा है पर जल्दी ही उसमें फल लग जाते हैं छोटा होते हुए भी बहुत खूबसूरत होता सबको अपनी ओर आकर्षित करता है, ठीक वैसे ही बेटा तुम्हें घर में छोटी छोटी ख़ुशियाँ देकर घरवालों का दिल जीतना है। अपनी एक अलग पहचान बनानी है। मुझे कभी निराश न करना बेटा कभी पलट कर किसी भी बड़े या छोटे को जवाब मत देना। मैं हमेशा सर गर्व से ऊँचा रखना। सभी घर वाले मेरा और पापा का बहुत मान सम्मान करते हैं कभी इस मान को घटने न देना। मैंने तुम्हें अपनी बेटी माना है तुम बोनसाई बन सबके दिलों को जीत लेना। छोटी छोटी ख़ुशियाँ ही परिवार को एकता के सूत्र में बांधकर रखती हैं अभी तक ये काम मैंने किया अब तुम्हारी ज़िम्मेदारी है।

अनु की बातों को ध्यान में रख कर रिया ने बिल्कुल वैसा ही किया हर किसी की छोटी से छोटी बात ध्यान में रखकर सभी का ध्यान रखना सीख लिया ख़ास कर

अपनी पर दादी का जो उसे बिल्कुल पसंद नहीं करती थी ऐसा कोई मौक़ा नहीं छोड़ती थी उसे ताने मारने पर रिया ने सब कुछ चुप चाप सुना कभी पलट कर जवाब नहीं दिया। जल्द ही रिया ने सबके दिलों में अपनी जगह बना ली। आख़िर एक दिन अनु की दादी सास को कहना ही पड़ा अनु तुमने तो एक ऐसा बोनसाई घर में ले आई जैसे बगीचे में लगे आम, जामुन, अमरूद और चीकू के पेड़ छोटे हैं पर जब फलों से लद जाते हैं तो ख़ुशियाँ दे जाते है वैसे ही ये हमारे घर की बोनसाई है छोटी छोटी ख़ुशियाँ देकर इसने हम सबके दिलों को जीत लिया। ख़ूब खुश रहो।

बोनसाई- 2

माँ आप तो इतनी होशियार थी पढ़ने में फिर आपने आगे पढ़ाई क्यों नहीं की। रिया की आठवीं कक्षा में पढ़ने वाली बेटी नमि ने माँ से सवाल किया। कहाँ खोई हो माँ मैं आपसे ही पूछ रही हूँ!

हम्म कुछ नहीं बेटा बस ऐसे ही तुम्हें कितनी बार तो बताया है पापा से शादी हो गई थी।

नहीं माँ आज तो आपको बताना ही होगा कहते हुए श्रद्धा का बेटा नितिन भी आ गया।

अच्छा बाबा बताती हूँ कह श्रद्धा ख़यालों में खो गई..

हे श्रद्धा कैसी हो तुम? तुम्हारा रिज़ल्ट तो बहुत अच्छा आया है। आगे की पढ़ाई का क्या सोचा है, कहाँ दाख़िला ले रही हो अब।

कहीं नहीं विभा अभी तो कुछ सोचा ही नहीं सब कुछ पापा पर डिपेंड करता है। पापा शायद ही बाहर भेजें।

यार इतने अच्छे नम्बरों से पास हुई है। इतनी होशियार है तुझे तो कोई भी कॉलेज आसनी से मिल जाएगा। तुझे तो पी.जी. करना था फिर इतनी मायूस क्यों हो रही है। एक बार अंकल से बात करके देख।

नहीं विभा पापा के आगे किसी की नहीं चलती कहती हुई श्रद्धा उदास हो कहने लगी ख़ैर मेरी छोड़ तू कहाँ जा रही है।

मैं और हमारे गैंग के सभी लोग इंदौर और पुणे से एम.बी.ए. कर रहे हैं। अच्छा अब चलती हूँ फिर जल्द ही मिलेंगे।

माँ माँ कहाँ खो गई फिर!

कहीं नहीं बेटा कुछ यादें है जो कभी भूली नहीं जाती।

मैं आगे पढ़ना चाहती थी। तुम्हारी नानी भी मुझे पढ़ाना चाहती थी पर नाना मुझे बाहर भेजना नहीं चाहते थे। उन्हें लगता था कि लड़कियाँ अगर अधिक पढ़ लिख गईं तो उन्हें लड़का कैसे मिलेगा, शादी में परेशानी होगी और तो और उनकी सोच ये थी कि लड़कियाँ अगर अधिक पढ़ लिख गईं तो हाथ से निकल जाएँगी, बाहर की हवा लगेगी तो बिगड़ जाएँगी। नानी ने बहुत प्रयास किए पर तुम्हारे नाना नहीं माने।

सही भी किया उन्होंने मेरी जड़ों और शाखाओं को काट कर उन्हें लगा कि उन्होंने मुझे उड़ने से रोक लिया पर ऐसा नहीं था। जैसे किसी वृक्ष की शाखाएँ और जड़ें हम काटते रहे हैं तो वो एक खूबसूरत 'बोनसाई' का पौधा बन हमारे बगीचे की शोभा बढ़ाता है, ठीक वैसे ही उन्होंने मुझे घर पर तो रखा पर मेरी भीतर की प्रतिभा में दिनों दिन निखार आता गया।

मैं दिनभर के कामों से फुर्सत होती और कमरे में जाते ही स्कैचिंग और ड्रॉइंग करने बैठ जाती। धीरे धीरे मेरे हाथों में बहुत सफ़ाई आ गई मैंने कई पेंटिंग बनाई, नानी के साथ रसोई का काम सीखा तो पाक कला में निपुण हो गई।

एक दिन तुम्हारे पापा का रिश्ता मेरे लिए आया। पापा ने मुझे पसंद कर लिया और हमारी शादी हो। मुझे आगे न पढ़ पाने का कोई ग़म नहीं क्योंकि तुम्हारे पापा का साथ पा मुझे नया जीवन मिला। तुम्हारे पापा ने मेरी प्रतिभा को पहचाना और उसे निखारा भी। आज इतना बड़ा इंस्टिट्यूट खोल दिया मेरे लिए जहाँ मुझे मेरे सपनो को उड़ने के आकाश मिला। शायद मैं पढ़ लिख लेती तो मेरी अंदर की प्रतिभा कहीं दाब कर रह जाती अच्छा हुआ न जो नाना मुझे बोनसाई बना दिया। पापा ने मुझे निखार दिया खुला आसमाँ दिया आज मैं हर बँधन से मुक्त हूँ।

सुनते सुनते बच्चे सो गए और श्रद्धा अपने पति की आँखों में कृतघ्नता से देख बाहों में समा गई उसके जीवन को आख़िर रमेश ने इतना खूबसूरत जो बना दिया था।

महत्व

निकिता की शादी को चार साल हो गए थे,शुरू से ही नितिन नौकरी करता था इसलिए वो परिवार से दूर पूना में रहता था। पढ़ी लिखी निकिता को सामूहिक परिवार में रहना पसंद नहीं था, इसलिए वो दिवाली के दिवाली ही अपनी ससुराल जाना पसंद करती थी। उसके ससुराल में सास ससुर के साथ ही दादी सास भी थी, जो थोड़ी पुराने ख़यालों की थी। कई बार ऐसा होता कि वो उसे बैठ कर सामूहिक परिवार का 'महत्व' बताने बैठ जाती जो उसे बिल्कुल पसंद नहीं आता। उसे उसके पहनावे के लिए टोकतीं कि ये तुम्हारा बंबई पूना नहीं है जो ऐसे कपड़े पहन कर ससुर के सामने खड़ी हो जाती हो कुछ तो लिहाज़ किया करो वैगरह वग़ैरह..

नितिन का जब मन करता वो हर तीज त्यौहार में चला जाता। इस बार कुछ ऐसा मौक़ा पड़ा कि लॉकडाउन लग गया और सभी को घर पर बैठ कर काम करने के निर्देश मिले। दो तीन महीने तो नितिन ने निकाल लिए पर उसका मन अब नहीं लग रहा था उसने निकिता से कहा क्यों न हम कुछ दिनों के लिए घर हो आएँ यहाँ भी घर पर रहकर काम करते हैं वहाँ भी कर लेंगे। तुम भी कुछ दिनों के लिए अपनी मम्मी के पास रह लेना। बहुत अच्छा मौक़ा मिला है अभी अपने परिवार के साथ रहने का वरना पढ़ाई और नौकरी के चक्कर में जाने कब से हम माँ पापा के साथ नहीं रह पाए हैं।

निकिता को मम्मी के घर का आइडिया अच्छा लगा दोनों ने पैकिंग की और वो अपने घर सागर आ गए। दो तीन दिन साथ रहने के बाद निकिता अपनी मम्मी के यहाँ भोपाल चली गई। कुछ दिन मम्मी के यहाँ रहने के बाद वो वापस सागर आ गई। धीरे-धीरे घर में घुलने मिलने का प्रयास करती रहती नितिन ने उसे पहले ही समझा दिया था कि दो चार दिन और कुछ महीनों की बात अलग होती है। इसलिए तुम थोड़ा एडजेस्ट कर लेना। वो पूरे मन से सभी के साथ मिलजुल कर रहने लगी कुछ ही दिनों

में उसे दादी का स्वभाव भी अच्छा लगने लगा। दोनों अपना अपना काम करते उन्हें काम के बीच में कोई उन्हें डिस्टर्ब नहीं करता था। कभी सुबह तो कभी रात उनकी पारी बदलती रहती थी।

निकिता ने अनुभव किया वो पूना में रहती थी तो उसे पहले पूरा घर का काम चाय, नाश्ता, दोपहर का खाना सब फटाफट करना पड़ता था ऊपर से बाई नहीं आ रही थी तो पूरा काम हाथ से करना क़ितना थक जाती थी वो। यहाँ हर चीज़ उसे हाथों हाथ मिलती है। सोच रही थी कि मैं कितनी ग़लत थी दादी को लेकर सच तो कहती थी दादी कि अगर चार दिन के लिए आती हो तो ढंग से रहा करो। अब देखो दादी खुद ही मुझे कहती हैं कि मुझे जिसमें सुविधा हो मैं वैसे कपड़े पहन कर रहूँ।

सच ये तो वक्त वक्त की बात है। आज मुझे सभी अपने हाथों पर रखते हैं मुझे पहले मेरे काम को पूरा करने को कहते हैं। क़ितना ख़याल रखते हैं सब मेरे और नितिन का। सच आज मुझे समझ आ गया सामूहिक परिवार का महत्व थोड़ी सी तकलीफ़ पर सुकून ज़िंदगी भर का। हर दुःख सुख में सभी साथ होते हैं। वहाँ तो हम अकेले ही होते यहाँ तो काम के साथ साथ मस्ती भी हो जाती है। जैसे दिन की शुरुआत होती है और जैसे दिन बीत जाता है पता ही नहीं चलता। कहाँ खो गई।

निकिता नितिन की आवाज़ से निकिता अपने ख़यालों से बाहर आई, कुछ नहीं नितिन थैंक्यू सो मच आज तुम्हारी वजह से मैं परिवार के साथ रह पाई, उन्हें समझ पाई। मेरी सोच को तुमने आज ग़लत साबित कर दिया। थैंक्यू नितिन थैंक्यू उसकी आँखों से ख़ुशी के आँसू बह रहे थे।

व्हाट्सएप स्टेट्स

रमेश की तबियत कुछ दिनों से ख़राब चल रही थी। बहुत समझाने पर भी वो अस्पताल नहीं जाना चाहता था। उसे कोरोना का बहुत ख़ौफ़ था उसे लगता अगर वो अस्पताल गया तो टेस्ट होगा और पॉज़िटिव आ गया तो बैठे बिठाय मुसीबत आ जाएगी। वो घर पर ही रहकर घरेलू उपचार करता रहा। अचानक एक दिन उसका आक्सीजन लेवल कम होने लगा उसकी जोड़ के कारण परिणाम ये हुआ की उसे अस्पताल में भर्ती होना पड़ा उसकी पत्नी बच्चे सभी परेशान हो उठे। उसका टेस्ट हुआ और वो पोज़िटिव निकला। उसके बाद तो सभी ने उनके परिवार से दूरी बना ली। काफ़ी परेशानी बढ़ गई। अकेला बेटा वो भी दसवी में पढ़ रहा था। दिन रात पिता के साथ अस्पताल में रहकर सेवा की।

दस बारह दिनों तक अस्पताल में रहने के बाद भी स्वास्थ्य में कोई सुधार नहीं आ रहा था। रमेश की हालत दिन ब दिन गिरती जा रही थी डाक्टर ने जवाब दे दिया और डाक्टर ने कहा एक प्रयास करके देख लेते हैं ईश्वर से दुआ करें हम प्लाज़्मा चढ़ा कर देखते हैं ।बेटी रिया को पिता की बहुत चिंता थी पर वो ससुराल से आ तो नहीं सकती थी उसका बेटा भी छोटा था और चारों तरफ़ महामारी का क़हर। जैसे ही उसने सुना उसने 'व्हाट्सएप पर स्टेट्स' डाल दिया दूर बैठ कर भी बेटी के स्टेट्स को देख रिश्तेदारों ने फ़ोन पर सम्पर्क कर रायपुर में तुरंत ही प्लाज़्मा का इंतज़ाम कर दिया। तुरंत ही रमेश को प्लाज़्मा चढ़ाया गया और उसकी जान बच गई। कुछ दिनों में ही रमेश स्वस्थ होकर घर आ गए।

प्यारी बड़ी माँ

बात उन दिनों की है जब औरतों का बाहर काम बहुत मुश्किल तो क्या नामुमकिन ही होता था। उस जमाने में आज से क़रीब पचपन छप्पन साल पहले की बात है तब मेरी बड़ी मम्मी श्रीमती गीता गुप्ता ने एक शिक्षिका की नौकरी की। घर पर पाँच देवर, एक छोटी नन्द, सास ससुर और दादी सास के बीच रहकर उन्होंने घर, बाहर और रिश्तेदारी निभाते हुए बड़ी ही सरलता से सब कुछ मैनेज किया। कई कठिनाइयाँ भी आई होंगी उनके जीवन में कई उतार चढ़ाव भी आए पर उन्होंने सब कुछ हँस कर किया। कभी उनके चेहरे पे कोई शिकन नहीं होती थी। हर वक्त मुस्कुरा कर उन्होंने सम्भाला। अपनी देवर और नन्द को बच्चों की तरह प्यार किया सभी उनका बहुत सम्मान करते थे और आज भी बड़ी भाभी के बिना किसी का कोई काम नहीं होता आज भी वही मान सम्मान सबसे मिलता है उन्हें।

आप में से कुछ लोग शायद उन्हें गीता मैडम के नाम जानते हों। जितने अच्छे से उन्होंने घर सम्भाला उतना ही नाम उन्होंने एक शिक्षिका के रूप में कमाया। घर का सारा काम करना फिर स्कूल जाना। उस समय बहुत बड़ी बात होती थी। पापा को पूजा पाठ अधिक पसंद नहीं था इसलिए वो पापा के कोर्ट से आने के पहले ही हर पूजा कर लिया करती थी। इतना बढ़ियाँ मेनेजमेंट होता था उनका की कही कोई तकलीफ़ किसी को नहीं होने देती थी। अपनी देवरानियों के साथ तालमेल बिठाना सबका ध्यान रखना उन्हें बहुत अच्छे से आता था। उनके नौकरी करने से कभी किसी को कोई तकलीफ़ नहीं हुई उनकी देवरानियों ने भी उनका पूरा साथ दिया। सभी के सहयोग के बिना उनका इस मुक़ाम तक पहुँचना संभव न होता। हमारा परिवार एक मिसाल है। मम्मी ने अपने प्रेम स्नेह और समर्पण से इस परिवार को सींचा है। मुझे गर्व है अपनी बड़ी माँ पर मैंने बहुत कुछ अपनी बड़ी माँ से सीखा है। उन्होंने हमें हमेशा

अच्छी शिक्षा और संस्कार दिए। हमेशा मेरी कोशिश यही है कि मैं भी अपनी बड़ी माँ की तरह बन सकूँ। उनकी तरह सब कुछ मेनेज कर सकूँ।

शिक्षा- मैंने अपनी बड़ी माँ से परिवार को एक सूत्र में जोड़कर रखना सीखा है। इसीलिए मैं इतने बड़े परिवार में जब शादी होकर आई तो मैंने उन्हें सदा स्मरण कर हर छोटी छोटी बात का ध्यान रखा परिवार के साथ तालमेल किस तरह करना चाहिए ये सारा कुछ अपनी बड़ी माँ से ही सीखा सच कहूँ तो जैसे मेरी बड़ी माँ सबकी प्यारी हैं वैसे ही मुझे मेरे परिवार से प्रेम मिलता है।

जामुन वाला

नितिन अपने परिवार के साथ अपनी माँ पापा के पास जा रहा था। गर्मियों के दिन ऊपर से उमस भरी तेज गर्मी। सभी मस्ती करते हुए चले जा रहे थे। जैसे ही हाईवे पर पहुँचे सड़क के किनारे पास के गाँव के कुछ बच्चे आम और जामुन लिए कुछ तपती धूप में खड़े, कुछ टपरी के नीचे बैठे बच्चे दिखाई दिए। नितिन की छोटी बेटी रिया ने कहा पापा गाड़ी रोको न हम जामुन और आम ले लेते हैं।

नितिन ने कहा अरे रिया देखो कितनी तेज धूप है अभी नहीं। माँ पापा से बोलो न देखो वो विचारे भी तो धूप में खड़े हैं।

रीता ने कहा नितिन गाड़ी रोकिए न। जैसे ही नितिन ने गाड़ी रोकी एक साथ कई बच्चे आशा से दौड़ पड़े। उनमें से एक सबसे छोटा और मासूम सा बच्चा नितिन की पेंट पकड़ कर कह रहा था, बाबू मेरे से ले लो न मेरी जामुन बहुत मीठी है। ले लो न बाबू। मैं बीस की तीन पैकेट दूँगा ले लो। इतने मासूमियत से कह रहा था कि किसी का भी मन मोह ले।

रीता ने कहा बीस के चार दोगे कुछ सोचते हुए बोला मैडम जी सब तो दस का एक दे रहे हैं मैं तो आपको वैसे ही अधिक दे रहा हूँ। रीता ने मुस्कुरा कर कहा अच्छा चलो तुम पचास के जामुन दे दो। अरे ये क्या रीता मोलभाव तो कर लो। बीच में ही रोकते हुए नितिन के दोनों बच्चे बोल पड़े पापा ये इतनी कड़ी धूप में खड़े हैं। हम बड़ी दुकानों में तो मोलभाव नहीं करते फिर यहाँ क्यों। नितिन थोड़ा खिसिया सा गया और कार में जाकर बैठ गया। रीता ने उससे कहा नाराज़ क्यों होते हो हम घर जा रहे हैं वहाँ बहुत लोग हैं हम कुछ आम और जामुन अधिक के लेते हैं वैसे भी शहरों में ये सब चीजें महँगी मिलती हैं। बच्चों ने और रिया ने उन बच्चों से अलग अलग पैकेट ले लिए।

नितिन किसी से कुछ बोल नहीं पा रहा था मन ही मन सोच रहा था क्या ग़लत कहा बच्चों ने सच ही तो कह रहे थे इतनी कड़कड़ाती धूप में खड़े बच्चे न जाने किस मजबूरी में यहाँ आकर बेचते हैं मजबूरी न भी हो पर उनमें कमाने की ललक तो है। यही हम बड़ी दुकानों में जाकर लें तो दुगनी क़ीमत में हम चुपचाप ख़रीद लेते हैं सोचते सोचते उसकी आँखों के सामने वो छोटा बच्चा झूमने लगा उसने गाड़ी पलटाई। अरे आपने गाड़ी क्यों मोड़ की रीता ने कहा। कुछ नहीं गाड़ी सड़क के किनारे लगा उसने उस बच्चे को बुलाया जो जामुन लिए सदी के किनारे बड़ी आस लिए खड़ा था उससे नितिन ने सारी जामुन ले ली उसके गालों को सहलाया और कहा छोटे तेरी जामुन बहुत मीठी है और तू तो उससे भी ज़्यादा। नितिन और बच्चे रास्ते में जामुन का लुफ़्त उठाते उस बच्चे की बातें करते आगे चल पड़े।

आँकलन

क्या मम्मी आप है न कुछ भी सोचती हो, किसी को बिना देखे बिना जाने सिर्फ़ उसकी फ़ोटो देख कर या उसका स्टेट्स देख कर ये आपने ये 'आँकलन' लगा लिया कि वो हमारे घर की बहू बनने लायक़ नहीं है। ऐसा भी कहीं होता क्या क्या माँ?

तुम तो चुप ही रहो आजकल के बच्चों को समझता क्या है तुम तो ऐसे बता रही हो जैसे तुम बहुत सायनी हो गई गई माना पढ़ लिख गई हो पर इन सबके मामले में तुम अभी छोटी हो। बस भी करो भागवान क़ितना बोलोगी। अगर नीति बोल रही है और राकेश को भी लड़की अच्छी लग रही है तो एक बार देखने में क्या हर्ज है। देखना ही तो है लॉन सा शादी तय करने बोल रहे हैं बच्चे। अब आप भी शुरु हो गए वो फ़ोटो में देखा नहीं आपने आधी टाँग उघारी फ़ोटो है जाने कैसे चाल चलन की होगी। माँ मैं भी तो छोटे कपड़े पहनती हूँ तो क्या मेरा चल चलन ठीक नहीं है। तुम सबको जैसा लगे वैसा करो बाद में फिर मत बोलना।

जैसे तैसे साधना को मना कर हेमा को देखने सभी लोग गए। बातचीत, देखने दिखाने में हेमा बहुत सुशील और संस्कारी लग रही थी सुलझे विचारों वाली पढ़ी लिखी हेमा ने अपने व्यवहार से सभी का दिल जीत लिया सिवा साधना को छोड़ कर। सभी घर लौट आए। सभी को हेमा पसंद आई साधना का मन न होते हुए भी बेमन से उसे हाँ करना पड़ा।

ख़ूब धूमधाम से राकेश की शादी हुई। नई नवेली दुल्हन का गृहप्रवेश हुआ। साधना न जाने क्यों उससे सहजता से बातचीत नहीं कर पा रही थी। हेमा समझदार थी उसे समझते देर न लगी राकेश ने वैसे भी उसे पहले से थोड़ी हिंट दे दी थी। अब तो बस हेमा सासु माँ का दिल जीतने में लग गई। नीति और हेमा सहेलियों की तरह रहतीं। एक दिन अचानक अधिक काम की वजह से साधना का स्वास्थ्य बिगड़ गया

फिर क्या था हेना ने साधना की तिमारदारी में कोई कसर नहीं छोडी हर वक्त उसका ध्यान रखती खाने पीने, दवाई समय पर देना काम नहीं करने देना हर चीज़ का ध्यान रखती। साधना आराम कर रही थी तभी नीति अंदर आई पूछा माँ अब कैसा लग रहा है! साधना ने नीति का हाथ अपने हाथ में लिया चेहरे पर एक आँसू। की बूँद लुढ़क पड़ी। क्या हुआ माँ कुछ नहीं बेटा तू सच कहती थी, मुझे किसी का भी 'आँकलन' इस तरह नहीं करना चाहिए। बिना कुछ सोचे समझे हम किसी के बारे में भी कुछ सोच लेते हैं और उसके प्रति यही धारणा उसके प्रति हमारा व्यवहार बदल देती है। हेमा बहुत ही सरल स्वभाव की संस्कारी लड़की है किसी के कपड़ों से उसके संस्कारों की तुलना नहीं करना चाहिए। आज मेरी आँखें खुल गई। अब बिना किसी से मिले समझे उसका आँकलन करने से पहले मैं सौ बार सोचूँगी। मम्मी अब ठीक हैं आप! हाँ हेमा बेटा मैं ठीक हूँ तुमने मेरी सेवा पूरे मन से की है तो मुझे तो ठीक होना ही था कहते हुए साधना ने हेमा को गले से लगा लिया।

लास्ट सीन

अरे सुनते हैं क्या कहाँ है आप? जल्दी सुनिए। क्या हुआ सुबह सुबह नींद क्यों ख़राब कर रही हो चिल्ला चिल्ला कर पूरा घर सर पर क्यों उठा रखा है। अरे वो शर्मा जी के यहाँ की कामवाली बाई कह रही थी कि सामने बिल्डिंग में जो आपके दोस्त मेहता जी रहते हैं उनका रात को देहांत हो गया। सोए के सोए रह गए किसी को पता ही नहीं चला। उन्हें शायद कोरोना हुआ था बता रही थी।

क्या बकवास करती हो सुमन मैंने कल शाम ही उनसे बात की है वो तो बिल्कुल ठीक थे, और हाँ उन्हें कोरोना हुआ था पर अभी नहीं महीने भर हो गए उन्हें ठीक हुए। तुम्हें बताया तो था। अब तो वो बिल्कुल स्वस्थ हो चुके थे। किसी ने तुमसे कहा और तुमने मान लिया। अंदर से थोड़े घबराए हुए पांडे जी ने जवाब दिया।

क्या हुआ माँ आप इतनी ज़ोर ज़ोर से क्यों चिल्ला रहीं थी पापा को सुबह सुबह उठा दिया संडे के दिन भी आप सोने नहीं देती।

अरे कुछ नहीं रिया तुम्हारी माँ को शर्मा जी की कामवाली बाई ने कह दिया कि मेहता जी का देहांत हो गया। कल ही मैंने बात की है उनसे।

यहाँ पलक झपकते दुनियाँ बदल जाती है रिया के पापा ये तो ज़िंदगी है आपके अच्छे दोस्त हैं इसलिए शायद आप यक़ीन नहीं कर पा रहे।

नहीं माँ ऐसा नहीं हो सकता कल रात को मैंने अंकल को फ़ेस बुक पर ऑनलाइन देखा था देखो व्हाट्सएप पर भी अंकल का 'लास्ट सीन' रात के तीन बजे दिखा रहा है कुछ भी बोले जा रही हो आप। मैं अभी अंकल को फ़ोन लगाती हूँ। तभी पांडे जी का फ़ोन बज उठा।

हेलो! दूसरी तरफ़ से आवाज़ आई तुमने कुछ सुना रमेश मेहता अब हमारे बीच नहीं रहा! धम्म से रमेश सोफ़े पर बैठ गए और उनके हाथ से फ़ोन नीचे गिर गया। उधर

से आवक आ रही थी तुम ठीक तो हो न रमेश क्या हुआ तुमको। पर रमेश शांत बैठे थे उनकी आँख की कोर नम हो आँसू टपक पड़े। रिया ने पापा को हिलाते हुए कहा क्या हुआ पापा क्या हुआ। रमेश बस इतना ही कह पाए तुम्हारी माँ सही कह रही थी बेटा मैंने अपना साथी खो दिया...

ब्लैकबोर्ड

अनिता खोई खोई सी बैठी अतीत के पन्नों को कुरेद रही थी सोच रही थी क्या कुछ नहीं किया मैंने राहुल के घर के लिए अपनी सारी ज़िंदगी लूटा दी पर मिला क्या कुछ भी नहीं अपने दिल के 'ब्लैकबोर्ड' पर राहुल के अलावा कोई नाम नहीं लिखा सारा दिन सिर्फ़ राहुल और बच्चों की ज़रूरतों को पूरा करने में बीत जाता कभी अपने बारे में सोचा ही नहीं या यूँ कहूँ कि समय मिला ही नहीं, शायद इसीलिए कभी ये ध्यान ही नहीं दिया कि वो मेरी आँख के नीचे क्या कमाल कर रहा है इतना प्यार किया उससे कभी सोचा नहीं था जो राहुल ने किया एक झटके में मेरे दिल के हज़ार टुकड़े कर गया। मैंने जिसे दिन रात पूजा जिस पर अटूट विश्वास किया उसने तो अपने दिल के ब्लैकबोर्ड से मेरे नाम को ही मिटा किसी और का नाम लिख मुझे बेगाना बना दिया।

अंतर्नाद

रमेश बाबू अभी कुछ ही दिन पूर्व रिटायर हुए थे। उन्हें ख़ाली बैठना पसंद नहीं था, वो अपने ऑफिस में पार्ट टाईम जॉब करना चाहते थे पर उनके बेटे अनीश ने उन्हें फिर से नौकरी की क्या आवश्यकता है पापा मैं हूँ न कह कर टाल दिया। बेटे की जिद के आगे पिता को हार मानना पड़ा। अनीश ने कह दिया अब आप लोग अकेले नहीं रहेंगे मैं जल्द ही आप लोगों को लेने आ रहा हूँ मैंने टिक़िट्स बुक कर ली है अब आप लोग अपनी पैकिंग कर लीजिए हम सब साथ रहेंगे। कुछ ही दिनों में अनीश के साथ रमेश बाबू अपनी पत्नी रमा को लेकर पुणे आ गए। खुले वातावरण में रहने वाले रमेश बाबू को थोड़ी दिक़्क़तें तो आ रही थीं पर कर भी क्या सकते थे।

अनीश ने माता पिता के आते ही एक नया फ़्लेट ले लिया जिससे उन्हें कोई तकलीफ़ न हो। दिनभर घर पर उन्हें अच्छा नहीं लगता था। रमा ने कहा आप दिन भर ख़ाली रहते हो आपका मन नहीं लगता आपको तो बाग़वानी बहुत शौक़ है पहले तो टाईम नहीं होता था क्यों न आप इस शौक़ को पूरा करो। अब रमेश बाबू का पूरा समय अनीश के बेटे को खिलाने और बाग़वानी में बीतने लगा पर कुछ दिनों में ही उन्हें ऐसा लगने लगा जैसे बहू नीता का बर्ताव रमा के प्रति ठीक नहीं है वो आए दिन कुछ न कुछ ऐसा बोल जाती है जिससे रमा के दिल को ठेस पहुँचती है पर रमा चुपचाप सुन कर अनसुना कर देती है। दोनों ही अपने बेटे की खुशी चाहते थे इसलिए चुप थे पर एक दिन नीता ने बातों बातों में कह दिया मम्मी कुछ दिनों की बात और होती है और हमेशा के लिए रहने की बात अलग होती है अब आप तो खुद ही देखती हैं अनीश अकेले ही कमाने वाले है और अब आयुष भी बड़ा हो रहा खर्चे तो बढ़ने ही हैं कम तो होना नहीं है बड़ा शहर ऊपर से फ़्लेट की किश्त भी भरनी पड़ती है।अगर पापा कहीं नौकरी कर लेते तो अच्छा था थोड़ी मदद हो जाती। रमेश बाबू ने सारी बातें सुन

ली थीं पर बेटे की ख़ातिर वो कुछ निर्णय नहीं ले पा रहे थे। दिन पे दिन नीता का व्यवहार बदलने लगा।

रमेश बाबू बैठे बैठे सोच रहे थे ये वही नीता है जो कभी हमसे क़ितना प्यार करती थी जब भी घर आती चहकती रहती थी क़ितना मान सम्मान देती थी हमें। शायद दूर के ढोल ही सुहावने थे आज यही नीता कितनी बदल गई अब हम इसे बोझ लगने लगे। रमेश उलझन में थे क्या करें वो ऐसा फ़ैसला लेना चाहते थे जिससे उनकी बात भी रह जाए और अनीश का दिल भी न टूटे। रमेश बाबू के मन से एक 'अंतर्नाद' हुआ और उन्हें एक क्षण भी नहीं लगा फ़ैसला लेने में उन्होंने अपने मन की पुकार सुनी उन्हें सुबह का इंतज़ार था। सुबह होते ही चाय पीते पीते रमेश बाबू ने अनीश को अपना फ़ैसला सुना दिया। अनीश अब हम वापस अपने घर जाना चाहते हैं बात को बीच में ही काट अनीश ने कहा पापा ये भी तो आपका घर है और में नहीं जाने दूँगा। नहीं बेटा मैं सोचता हूँ जब तक मेरे हाथ पैर चल रहे हैं मैं तुम्हारी माँ के साथ भोपाल में ही रहूँगा यहाँ मेरा कोई साथी भी नहीं है वहाँ तो मेरे सारे दोस्त हैं टाईम भी कट जाएगा और में आता जाता बना रहूँगा तुम दुखी मत हो तुम्हारा जब मन लगे तुम आ ज़ाया करना। तुम्हारे पापा ठीक कह रहे हैं बेटा पापा ने जो सोचा है जो कह रहे है कुछ सोच समझ कर ही कह रहे हैं हम हमेशा के लिए नहीं जा रहे जब तुम कहोगे हम आ जाएँगे। रमेश बाबू रमा को लेकर वापस आ गए सारे रास्ते बस एक ही बात सोच रहे थे मेरा फ़ैसला गलत नहीं है मैंने अपने 'अंतर्नाद' की बात मान आज सही फ़ैसला लिया हम भी अपनी ज़िंदगी ख़ुशी से जिएँगे और बच्चे भी।

अनुभूति

रमा अपनी बहू के प्रति थोड़ी सक्त थीं, या यूँ कहें कि उनका स्वभाव ही थोड़ा थिंक मिज़ाज और कठोर था। घर पर देवरानी जेठानियों से भी कभी पटी नहीं बहू आई तो उससे ही वैसा व्यवहार रहा। बावजूद इसके बहू कृति उनके साथ हर वक्त अच्छा ही बोलती सरल स्वभाव वाली कृति को पहले तो बहुत परेशनी हुई पर समय के साथ वो उनके स्वभाव में ही ढल गई उनकी किसी बात बुरा भी नहीं मानती थी। धीरे-धीरे समय बितता रहा बच्चे भी बड़े होने लगे।

देवरानियों की बहू को जब भी रमा देखती तो यही सोचती ये कितना हिल मिल कर रहती हैं साथ उठती बैठती हैं देवरानी उमा की बहू कितनी तेज है फिर भी उमा उससे हमेशा प्रेम से बोलती है और छोटी देवरानी की बहू तो सालभर न हुए और अलग हो गई। उन सबके बारे में सोचते सोचते पहली बार रमा के हृदय में कृति के लिए प्रेम की 'अनुभूति' हुई। रमा सोच रही थी मैंने तो कभी दो बोल अपनी बहू से प्रेम के नहीं बोले पर उसने मेरा हर ग़ुस्सा, हर ताना सहा और पलट कर कभी जवाब भी नहीं दिया मैं ही अपने हीरे जैसी बहू को परख न सकी उसे इतना सताया मैंने उसके डार्क स्वभाव का मान भी न रख सकी।

क्या हुआ करन की माँ किन ख़यालों में खोई हो कहते हुए रमेश कमरे में आए। कुछ नहीं मैंने बहुत देर कर दी अपनी बहू को समझने में अपनी हीरे सी बहू की कदर नहीं की। तो क्या हुआ अभी भी देर नहीं हुई है करन की माँ 'जब जागो तभी सबेरा' तुम्हें अंदर से 'अनुभूति' हुई ये बड़ी बात है कहते हुए उन्होंने कृति को आवाज़ लगाई। कृति को सीने से लगा रमा रो पड़ी।

ईदी- 1

जब शादी होकर आई तो उसके घर का माहौल और सलीम के घर के माहौल में बहुत अंतर था। रेश्मा के घर जब कोई आता तभी यदा कदा ही माँसाहारी भोजन बनता वो अलग से बनता। उनके घर इन सबके बर्तन, गैस की पट्टी सभी अलग थी। भाई करीम को खाना होता तो वो अधिकतर बाहर ही खा लेता, घर पर शाकाहारी ही भोजन बनता। यहाँ सलीम के घर आए दिन कभी मटन तो कभी कुछ बनता ही रहता। उसे बिल्कुल पसंद नहीं आता था। वो अपने लिए अपनी पसंद का खाना बना लेती थी। रेश्मा को पशु पक्षियों व जानवरों से बहुत प्रेम था। वो हमेशा ही सलीम से कहती तुम्हें दुःख नहीं होता इन्हें मारने में वो मुस्कुरा देता। ससुराल में उसकी पहली ईद थी। एक दिन पहले से ही घर में ख़ूब चहल पहल थी।सजा धजा कर नानु बकरे को तैयार किया था बस उसके जाने की अंतिम घड़ियाँ ही शेष थी।

अश्फ़ाक मियाँ रेश्मा के ससुर ने सब से पूछा इस साल तुम सबको ईदी में क्या चाहिए बताओ बाद में आपस में मत लड़ना मुन्नी, कुल्सुम, जावेद अपने तीनों बच्चों से वो बोल रहे थे अरे रेश्मा तुम्हारी तो पहली ईद है इस घर में तुम्हें क्या चाहिए तुम भी बता दो। सभी ने अपनी अपनी पसंद के सामान बता दिए। रेश्मा बड़े धीरे से बोली अब्बू मुझे कुछ नहीं चाहिए। अम्मी मुमताज़ बोली ईदी के लिए मना नहीं करते बेटा माँग लो जो तुम्हें पसंद है। अब्बू जो मैं माँगूँगी क्या मुझे सच में देंगे??

हाँ ज़रूर ! अब्बू मैं चाहती हूँ कि हम बेज़ुबान जीवों की हत्या न करें इन्हें हम न खाएँ। मुझे पता है अब्बू ये करना आसान नहीं पर हम कोशिश तो कर ही सकते हैं। इन पर रहम के सकते हैं न अब्बू!

हाँ रेश्मा थोड़ा मुश्किल तो है पर नामुमकिन भी तो नहीं है। जावेद बोला अब्बू ये क्या कह रहे हैं आप?? बिल्कुल चुप भाई क्या ग़लत कहा रेश्मा ने तुम बाहर

खाओ उसने मना नहीं किया। अब्बू इतनी आसानी से मान जाएंगे रेश्मा ने सोचा नहीं था क्योंकि उन्हें ये सब खाना बहुत पसंद था। अश्फ़ाक मियाँ उठे और जाकर उन्होंने नानु को आज़ाद कर दिया। रेश्मा से कहा तुम्हारी ईदी रेश्मा की आँखो से ख़ुशी के आँसू बह रहे थे एक वादे के साथ उसने अपने नानु के साथ साथ बेज़ुबान जीवों को ज़ोर मरने से बचा लिया।

ईदी- 2

पड़ोस में रहने वाले जुम्मन चच्चा से रमेश बाबू की गहरी दोस्ती थी। हर त्यौहार वो मिलजुल कर मानते थे चाहे ईद हो या दिवाली या होली वहाँ हिंदू मुस्लिम में कोई भेद नहीं था। साथ उठना बैठना यहाँ तक की कभी सुबह की चाय जुम्मन चच्चा के यहाँ होती तो शाम की बैठक रमेश बाबू के यहाँ।

रमेश बाबू के बेटे सौरभ का विवाह कुछ माह पूर्व ही हुआ था शुरू-शुरू में बहू रागिनी को थोड़ा अटपटा लगता पर धीरे-धीरे वो इनके रिश्तों को समझ गई। सावन का महीना था रक्षाबंधन का त्यौहार आने वाला था एक दिन बातों बातों में चच्चा ने पूछा तुम्हारा तो पहला रक्षाबंधन है अब तो तुम मायके जाओगी। रागिनी उदास हो गई उसने कहा नहीं चच्चा मायके जाकर क्या करूँगी भाई तो इतनी दूर विदेश में बैठा है कहकर रागिनी अंदर चली गई। कुछ ही दिनों में ईद का त्यौहार आया जुम्मन चच्चा ने सबके लिए कोई न कोई तोहफ़ा हमेशा की तरह लेकर आए रागिनी से पूछा तुम्हें क्या चाहिए ईदी अब तो तुम्हें भी ईदी मिलेगी। रागिनी ने कहा को सबको दी है वही मुझे भी दे दीजिए चच्चा। चच्चा मुस्कुराए और अभी तक मैं तुम्हें बेटी मानता था पर आज से तुम मेरी बेटी हो और हाँ तुम उदास न होना दो दिन बाद रक्षाबंधन है इस रक्षाबंधन तुम अल्ताफ़ को राखी बाँधना आज से वही तुम्हारा भाई है और हमारा घर तुम्हारा मायका। यही तुम्हारी 'ईदी' है। रागिनी की आँखो से झर झर आँसू बह रहे थे। रागिनी चच्चा से ऐसे गले मिली जैसे अपने पिता से मिल रही हो। रमेश बाबू ने पिता पुत्री का मेल मिलाप हो गया हो तो मीठी सेंवई और खीर ले आओ भाई आज तो दो-दो ख़ुशी के मौक़े हैं आज तो मुझे कोई नहीं रोकेगा। सभी के ठहाके कमरे में गूँज उठे।

मौन

निशा गरीब माता पिता की संतान थी पर सागर के पिता रमेश और निशा के पिता अमरनाथ बचपन के मित्र थे। बचपन से ही निशा रमेश को बहुत पसंद थी और वो हमेशा निशा को अपनी बहू बनाने की बात कहते थे। बड़े होने पर रमेश ने सागर की शादी निशा से तय कर दी अमरनाथ जानते थे कि सागर बड़े बाप की बिगड़ी हुई संतान है पर ग़रीबी की मार और रमेश की दोस्ती ने उन्हें ऐसा करने पर मजबूर कर दिया। रमेश हमेशा यही कहते थे शादी के बाद बच्चे खुदबख़ुद सुधर जाते हैं। रमेश की पत्नी विमला को निशा पसंद नहीं थी सिर्फ़ इसलिए कि वो गरीब घर की थी। पर रमेश के आगे उनकी एक न चली। दोनों की शादी हो गई।

कुछ दिन तो बहुत अच्छे से बीते धीरे-धीरे रमेश ने अपने रंग दिखाना शुरू कर दिया। पहले कभी कभी शराब पीकर घर आता था अब आए दिन शराब के नशे में धुत्त होकर आता और निशा पर हाथ उठाता कहीं गाली गलौच करता। विमला भी उसे परेशान करने में कोई कोर कसोर नहीं छोड़ती थीं। निशा चुपचाप सब कुछ बर्दाश्त करती थी इसका मतलब ये नहीं कि उसे कोई कष्ट नहीं था। वो अब तक मौन थी तो सिर्फ़ अपने घर की इज्जत बचाने के लिए। सागर ने वैसे भी उसे कही का नहीं छोड़ा था, ऊपर से सास के दिन रात के तानों से त्रस्त निशा करती भी तो क्या करती। शायद बात इतनी बढ़ती भी न अगर निशा ने पहले ही अपनी चुप्पी तोड़ दी होती पर उसे सिर्फ़ अपने माता पिता की चिंता थी अगर वो सागर को छोड़ देती तो जाती भी कहाँ लोक लाज का डर ऊपर से गरीब माता पिता खुद का भरण पोषण ही बड़ी मुश्किल से कर पाते अगर निशा भी चली जाती तो कैसे गुज़ारा होता बस इन्ही कुछ कारणों से निशा हमेशा मौन रहती पर सहती भी कब तक सहनशीलता की भी हद होती है।

एक दिन निशा वो कदम उठाया जो उसे बहुत पहले ही उठा लेना चाहिए था। उसने सारी लोकलाज त्यागकर खुद के लिए जीने का फ़ैसला लिया। उसे एक स्कूल में नौकरी मिल गई अब निशा घर से बाहर निकलने लगी उसकी कक्षा में पढ़ने वाले राहुल की माँ वकील थीं निशा ने उनसे मिलकर सारी परेशानियाँ बताई उन्होंने उसकी मदद का वादा किया और निशा और सागर के तलाक़ के प्रपात तैयार कर लिए। घरेलू हिंसा के तहत सागर को जेल हो गई और निशा को उससे छुटकारा मिल गया। निशा ने तलाक़ तो के लिया पर वो अभी सागर और उसके परिवार के बारे में सोच रही थी। सोच रही थी अगर मैं मौन न रहती सागर के ख़िलाफ़ मैंने पहले ही कदम उठा लिया होता तो शायद स्थिति आज कुछ और होती, शायद ये तलाक़ न होता, हम साथ होते काश मैंने अपनी चुप्पी समय रहते तोड़ दी होती....

क्षतिपूर्ति

पिता के के अचानक स्वर्गवास से सारा घर शोक संतप्त हो उठा दो बहने दोनों की शादी हो चुकी थी घर पर छोटा भाई जो ज़िम्मेदारी उठाने के लिए समर्थ नहीं था उम्र में भी बहुत छोटा था। माँ भी कभी घर बाहर न निकली थी उन्हें भी इतनी दुनियादारी नहीं आती थी। न कभी बाज़ार सब्ज़ी लेने गईं, न ही बाहर के कोई काम किए अचानक इस हादसे से माँ को बहुत बड़ा सदमा लगा था। माँ को सम्भालना बहुत मुश्किल हो रहा था ऊपर से छोटी बहन भाई का भी बुरा हाल था। रीता का स्वास्थ भी बिगड़ रहा था पर किसी तरह रीता ने अपने मन को कड़ा कर सभी को सम्भाला क्योंकि अगर वो भी टूट जाती अपना संयम खो देती तो इन सबको कौन सम्भालता। जैसे तैसे पिता के सारे संस्कार पूरे किए।

तेरहवीं का कार्यक्रम हुआ तो रीता के सब्र का बाँध टूट पड़ा अपने पिता की लाड़ली पुत्री थी भाई के सिर पर जैसे ही पाग बंधी वो फूट-फूट कर तो पड़ी। उसे बार बार बेहोशी आने लगी उसे सम्भालना बड़ा मुश्किल हो गया वो बार बार एक ही बात कहे जा रही थी माँ तुम चिंता मत करो मैं हूँ न में सब सम्भाल लूँगी माँ मैं सब सम्भाल लूँगी। तेरहवीं के बाद रमेश कुछ दिनों के लिए रीता को माँ के पास छोड़ गए थे। अब रोता के जाने का वक्त आया तो रीता ने अपने भाई बिट्टू और छोटी बहन रिया के सर पर बड़े प्रेम से हाथ फेरा और गले लगा कर कहा मैं पापा की 'क्षतिपूर्ति' तो पूरी नहीं कर सकती पर हाँ आज मैं ये वादा करती हूँ मैं अपने बड़ी बहन होने के साथ साथ एक पिता का फ़र्क़ भी निभाऊँगी तुम पर कभी कोई आँच नहीं आने दूँगी। रमेश ने रीता का हाथ पकड़ कर कहा तुम ही क्यों रीता हम दोनों ही एक पिता का फ़र्क़ निभाएँगे मेरे होते हुए माँ आप कभी चिंता न करना जब तक मैं हूँ आपको किसी बात की तकलीफ़ नहीं होने दूँगा। रमेश की बात सुन माँ ने उन्हें गले से लगा लिया और रुँधे गले से बस इतना ही कह पाईं पापा की कमी तो कभी पूरी नहीं हो सकती पर आपने जो फ़र्ज़ निभाए में धन्य हो गई आपके जैसे दामाद पा कर और कमरे में सभी की सिसकियाँ गूँज उठी.....

सावन तीज

अपने बरामदे चाय की चुस्की लगाते लगाते प्रतिमा गहन विचारों में खो गई। कितने धूमधाम से मानती थी वो हर वर्ष सावन तीज का त्यौहार। प्रतिमा के घर हर वर्ष सावन के महीने में सावन तीज की धूम रहती है वो अपने घर के पास वाले बगीचे में सुंदर सा झूला लगवाती है और बहुत सुंदर सजावट करती है सभी सखी सहेलियों और आस पास की महिलाओं को बुलाती है। उन सभी को सावन लगते ही सावन तीज का बेसब्री से इंतज़ार रहता है। इस वर्ष भी सावन का महीना लगते ही प्रतिमा की तैयारियाँ शुरू हो गई।

रसोई में जल्दी जल्दी काम निपटाते निपटाते बड़बड़ाती जा रही थी अभी बस चंद दिन ही बचे हैं और कितने सारे काम पड़े हैं करने को अभी तो बहुत सी तैयारी करना है रसोई से ही अपनी छोटी देवरानी को आवक लगाई रश्मि सुनों ये सब काम मैं निपटा लूँगी तुम जरा एक बार चेक कर लो कुछ रह तो नहीं गया बाज़ार से मँगवाने का अरे.... हाँ मेहंदी तो मँगाई नहीं सुनो और देखो क्या बचा है सारा सामान याद से मँगवा लेना।

रश्मि तुम पहले मेहंदी लगवा लो तुम्हारा तो पहला सावन तीज है न मेहंदी वाली आती होगी लो आ गई चलो जल्दी खाना खा लो और लगवाओ मेहंदी सुनो शांता अच्छी भर भर हाथ लगाना पहला तीन का त्यौहार है छोटी भाभी का। हाँ भाभी चिंता न करो अच्छी ही लगाऊँगी कि सब सहेलियाँ आपकी देखती रह जाएँगी।खुद ने भी भर भर हाथ मेहंदी लगवा ली अरे शांता तूने तो अपने भैय्या का नाम लिख ही नहीं चल यहाँ लिख दे। वो कल आने वाले हैं दिल्ली से। भैय्या यहाँ नहीं हैं क्या भाभी हाँ रे वो जरा काम के सिलसिले में दिल्ली गए थे चार पाँच दिन पहले कल सुबह तक आ जाएँगे। कितने सपने सजा लिए थे प्रतिमा ने।

शाम को अपने बरामदे में बैठ चाय पीते पीते न जाने कितने ख़्वाब देख रही थी। अपने पति अनिल के साथ सावन तीज का त्यौहार मनाने के उन्हें मेरी मेहंदी पसंद आएगी वो कल आएँगे तो मैं उनसे कह दूँगी कल कोई बहाना नहीं चलेगा तुम्हें तो

मेरे साथ बगीचे में आना ही होगा और हम बहुत सुंदर सुंदर फ़ोटो भी खिचवाएँगे। अरे भाभी कहाँ खो गईं भैय्या के ख़यालों में। धत्त पगली कुछ भी कहती है। दोनों रात का काम निपटा कल की तैय्यारी में जुट गई सहेलियों को गिफ़्ट देना है गेम खिलाना सबकी लिस्ट तैयार कर की। अब प्रतिमा को इंतज़ार था तो सुबह का सारी रात बेचेनी में सो नहीं पाई पता नहीं क्यों उसे बुरे बुरे ख़याल आ रहे थे। सोच रही थी ऐसा लग रहा है जैसे कोई अनहोनी होने वाली है। सारी रात आँखों ही आँखो में बिता दी।

सुबह के चार बाज रहे थे उससे रहा नहीं गया उसने अनिल को फ़ोन लगाया घंटी जा रही थी पर अनिल ने फ़ोन नहीं उठाया उसका मन घबराया पर उसने अपने मन को शांत कर लिया ये समझकर कि वो गाड़ी चलाते वक्त फ़ोन नहीं उठाते। सुबह के यही कोई साड़े पाँच बज रहे थे दरवाज़े पर घंटी बजी। प्रतिमा दौड़ कर दरवाज़े की ओर भागी घबराकर दरवाज़ा खोला तो देखा ड्राइवर अकेला था उसने कहा मेमसाब सर की अचानक तबीयत ख़राब हो गई मुझे कुछ समझ नहीं आया मैंने उन्हें अस्पताल में भर्ती करवा दिया उन्होंने रात में फ़ोन लगाने से मना कर दिया था जब आपका फ़ोन आया सर को मैं अस्पताल में भर्ती करवा रहा था सर ने कुछ भी बताने से मना किया फिर भी में उन्हें एडमिट करवा कर आपको बताने आ गया। प्रतिमा को समझ नहीं आ रहा था वो क्या करे उसने सबको आवाज़ लगा कर उठाया सब अस्पताल जाने के लिए निकल पड़े। अस्पताल पहुँच कर उन्हें पता चला कि उसे दिल का दौरा पड़ा था। कुछ घंटों बाद अनिल ने आँखे खोली प्रतिमा का हाथ पकड़ कर बोले सॉरी प्रतिमा मैं तुम्हारे साथ झूला नहीं झूल पाऊँगा अपना ध्यान रखना लड़खड़ाती आवज में वो इतना ही बोल पाए और प्रतिमा ने उनके मुँह पर हाथ रख कहा चुप हो जाईए कुछ भी बोलते हैं और बस अनिल का हाथ प्रतिमा के हाथ से छूट गया प्रतिमा ज़ोर से चिल्ला पड़ी नहीं आप मुझे छोड़कर नहीं जा सकते....। अचानक अपने कंधों पर किसी का स्पर्श पा वो अतीत से बाहर आई आँखो में आँसू थे। बाग में झूला देख बुदबुदाई ऐसा लगता है मानो कल की ही बात हो कल तक सबकुछ ठीक था अचानक सब ख़त्म हो गया।

सुख के सैलानी

राधिका कुछ चाहती थी पर क्या करे उसे कुछ समझ नहीं आता था। वो अक्सर रमेश से कहती सुनो मुझे ग़रीबों बच्चों के लिए कुछ करना चाहती हूँ।क्या मैं किसी एंजियो से जुड़ जाऊँ? रमेश कहते तुम्हें किसी एंजियो से जुड़ने की क्या ज़रूरत है राधिका तुम अपने आस पास ही रहने वाले बच्चों को फ़्री में पढ़ाओ घर में काम करने वाली बाइयों को शिक्षा दो तुम्हें भी ख़ुशी मिलेगी। राधिका ने सब कुछ किया पर वो अधिक दिनों तक नहीं संभव हो पाया क्योंकि वो पढ़ना ही नहीं चाहते थे। राधिका का मन बहुत उदास हो गया वो पढ़ाना चाहती है पर कोई शिक्षा का महत्व ही नहीं समझता।

राधिका के घर एक नई कामवाली बाई लगी वो अक्सर अपने बच्चों की फ़ीस के लिए उधार पैसे माँगती और मरमर कर काम करती अपने बच्चों को पढ़ाने के लिए ।अधिक काम करने की वजह से उसकी तबियत ख़राब रहने लगी तब राधिका के मन में विचार आया क्यों न मैं इसकी मदद करूँ उसने फ़ौरन रमेश से इस विषय में बात की रमेश ने भी तुरंत हाँ कर दी और कहा नेकी का काम है कितनी ख़ुशी की बात है राधिका कि तुम किसी के लिए 'सुख की सैलानी' बन सको। दूसरे दिन राधिका ने अपनी बाई से कहा मैं तुम्हें तुम्हारी बेटी की पढ़ाई के लिए पैसे दूँगी शर्त ये है कि तुम अपनी सेहत का ख़याल रखोगी और जब भी पढ़ाई के लिए पैसे चाहिए हो बिना किसी संकोच मुझसे माँग लोगी और हाँ फ़ीस पटा कर रसीद ज़रूर दिखाना। राधिका के चेहरे पे एक अजीब सा संतोष था अब उसने धान लिया था वो इसी तरह ज़रूरत मंद बच्चों की पढ़ाई का खर्च उठाएगी।

बचत

सात साल की प्यारी बिटिया रिया को उसकी दादी रश्मि रोज़ रात में कहानियाँ सुनाया करती थी। कहानी कुछ ऐसी होती कि उनमें कोई न कोई सीख छुपी होगी थी। एक दिन रिया स्कूल से आई और दादी से कहा दादी दादी आज मुझे टीचर ने कहा कि कल हम बचत कैसे करते हैं ये सीखेंगे। दादी ये बचत क्या होती है? रश्मि ने कहा अभी पहले कपड़े बदलो मुँह हाथ धो लो फिर हम इस पर बात करेंगे ठीक है।

रात को फिर दादी से वही प्रश्न लिए रिया खड़ी हो गई। शुभा ने कहा बेटा दादी परेशान नहीं करते। नहीं मम्मा मुझे अभी पूछना है। रश्मि ने बड़े प्रेम से रिया को समझाना शुरू किया। रिया बचत चाहे पानी की हो या बिजली की या फिर पैसों की हमें बचत करना चाहिए। देखो जब तुम कमरे न हो तो बिजली बेवजह जलती नहीं छोड़ना चाहिए जब ज़रूरत हो तब चालू कर लो इससे बिजली की बचत होती है। दूसरा हमें पानी का बेवजह दुरुपयोग नहीं करना चाहिए। जैसे हम अपने आरो से बहने वाले पानी को एक जगह एकत्रित कर उसका सदुपयोग कर सकते हैं जिससे पानी की बचत भी होगी और उस पानी का उपयोग भी होगा जैसे उस पानी से हम कपड़े धो सकते हैं, बर्तन मल सकते हैं या फिर पेड़ों में सिंचाई कर सकते हैं। तीसरा हम पैसों की बचत कर सकते हैं। छोटी छोटी चीजों में बेवजह खर्च न करें, अपनी पाकेट मनी से पैसे बचाकर गुल्लक में जमा करे हम रोज़ नियम बनाएँ कि हमें रोज़ चाहे दस रुपए ही क्यों न हो हम जमा करें इससे हमारी पैसे जमा करने की आदत बनेगी और यही बचत करने की आदत रही तो हम नियम से पैसे जमा करने लगेंगे और ज़रूरत के समय यही पैसे हमारे काम आ जाएँगे। सुनते सुनते रिया सो गई।

कुछ दिनों बाद रिया अपनी मम्मा शुभा के साथ अपनी नानी के घर गई। उसके दिमाग़ में बचत की बातें अच्छी तरह बैठ गई थी। वहाँ उसने देखा आरो का पानी ऐसे

ही बन रहा है उसने झट से वहाँ एक गंजी लगा दो और बड़ी मासूमियत से कहा नानी इस पानी की बचत करना चाहिए और इसका उपयोग हमें पेड़ों में डाल कर करना चाहिए या फिर किसी भी काम में लाना चाहिए। अरे वाह रिया तुम तो बड़ी समझदार हो। ये सब तुमने कहाँ से सीखा? अरे नानी मुझे मेरी दादी में बताया है कि बचत का मतलब सिर्फ़ पैसे की ही नहीं पानी और बिजली और हाँ नानी खाने की भी बचत करना चाहिए मेरी टीचर ने बताया थाली में उतना ही खाना लो जितना हम खा सके। शुभा और उसकी माँ रमा का मन गदगद हो उठा, जो बात बड़े नहीं समझ पाते वो बात प्यारी रिया ने उन्हें समझा दी।

लँगड़ा राजा

एक राजा था उसके तीन बेटे थे, एक अंधा,एक लँगड़ा और एक गूँगा। राज वृद्ध हुआ तो उसे अपने उत्तराधिकारी की चिंता होने लगी। राजा बहुत परेशान रहने लगा ये सोचकर कि आख़िर राजा किसे बनाऊँ। खूबियाँ उसके तीनों बेटों में थी। राजा ने अपने तीनों बेटों बड़ा बेटा कुँवर राम सिंग जो अंधा था, मँझला बेटा कुँवर मान सिंग जो लँगड़ा था और तीसरा छोटा बेटा कुँवर ढाल सिंग जो कि गूँगा था सभी सर्वगुण सम्पन्न थे पर कमियाँ तो तीनों में थी।

राजा ने अपने तीनों बेटों को अपने पास बुलाया गहन चिंतन मंथन हुआ। तीनों भाइयों में अत्यधिक प्रेम था। हमेशा एक दूसरे के साथ रहते थे विवाह होने बावजूद तीनों की पत्नियाँ भी सगी बहनों की तरह रहती थी। गहन चिंतन के बाद राजा ने निर्णय लिया कि मँझला पुत्र कुँवर माँ सिंग को राज गद्दी पर बिठाया जाए और राम सिंग और ढाल सिंग उसकी हर तरह से मदद करेंगे जिससे कि राजकाज सुचारु रुप से चल सके दोनों भाइयों की रणनीति होगी और राजा होगा मानसिंग। तीनों की सूझ बुझ, एकता और प्रेम की वजह से पूरे राज्य और सोलपुर के आस पास के गाँवों में मानसिंग का डंका बजने लगा और हर तरफ़ 'लँगड़े राजा' की जय जयकर गूँज उठी।

शिक्षा- हमें इस कहानी से ये शिक्षा मिलती है कि परिवार का साथ हो, सूझबूझ और प्रेम से रणनीति बनाकर कोई कार्य किया जाए तो कोई भी काम मुश्किल नहीं होता। फिर चाहे हमारे अंदर लाख कमी हो मिलजुलकर रहें तो शारीरिक कमी भी हमें कामयाब होने से नहीं रोक सकती।

एकांतवास

नीलिमा सारा दिन घर के कामों में उलझी रहती कभी अपने लिए उसके पास वक्त ही नहीं होता था। कई बार उसके पति राहुल कहते भी सारा दिन घर के कामों में जुटी रहती हो थोड़ा आराम भी किया करो तो वो बदले में मुस्कुरा देती और फिर वही दिनचर्या। धीरे धीरे बच्चे अनमोल व शिवि भी बड़े हो गए अब कभी कभी नीलिमा को थकान की वजह से खीझ भी आ जाती और वो थोड़ी नरक हो जाती। थकान व काम के कारण उसका स्वभाव थोड़ा चिड़चिड़ा होने लगा।

एक दिन उसे उसकी सहेली रीता का फ़ोन आया बातों बातों में रीता ने कहा क्या बात है नीलिमा तुम बहुत बुझी बुझी सी लग हो रही हो कोई परेशानी है क्या यार? नहीं तो बस ऐसे ही तुझे तो पता ही है घर के काम, बच्चे और माँ के काम करते करते थक जाती हूँ ऊपर से माँ की सुनाने की आता अब तो सहन ही नहीं होती।

तू कुछ समय अकेले क्यों नहीं व्यतीत करती। थोड़ी देर मेडिटेशन किया कर, बाहर ज़ाया कर चार लोगों से मिलेगी तो मन भी अच्छा लगा रहेगा तेरा। आख़िर कब तक इन सब में उलझी रहेगी।

हाँ रीता बात तो सही है ये तो कहते ही हैं आजकल बच्चे भी चिल्लाते हैं कि मम्मी थोड़ा टाईम अपने लिए भी निकालो। चल रखती हूँ बाद में बात करूँगी। नीलिमा ने फ़ोन रख दिया फिर काम में जुट गई।

आज नीलिमा सुबह जल्दी उठ गई। उसने उठते ही प्रण लिया आज से वो थोड़ा वक्त अपने लिए भी निकालेगी। ऊपर वाले कमरे में जहाँ कोई आता जाता नहीं है वहाँ एकांत में बैठ कर उसने थोड़ा समय ध्यान किया उसे बहुत अच्छा महसूस हुआ बिना किसी चिड़चिड़ाहट के उसने सारा दिन व्यतीत किया। अब रोज़ का ही नियम बन गया था नीलिमा ने अपनी दिनचर्या में थोड़ा सा परिवर्तन लाया थोडी देर 'एकांतवास'

में बिताना शुरु किया और अपनी जीवन को एक नई दिशा दी, जिसकी वजह से उसके जीवन में ख़ुशियाँ ही ख़ुशियाँ आ गई क्योंकि जब मन और तन दोनों स्वस्थ होंगे तो आपसी संबंध भी अपने आप प्रगाढ़ होंगे। नीलिमा में आए इस परिवर्तन को देख एक दिन राहुल और बच्चों ने उसकी खिंचाई की क्या बात है आजकल घर का माहौल और आपका स्वभाव कुछ बदला बदला सा लगता है, सासु माँ भी कहाँ चूकने वाली थी उन्होंने भी कहा हाँ भाई आजकल तो हमारे तानों के बदले ताने नहीं फूल बरसते हैं और खिलखिला कर सभी हँस पड़े। आज नीलिमा जवाब में मुस्कुराई नहीं बल्कि हँसते हुए जवाब दिया ये सब 'एकांतवास' का असर है।

विज्ञापन

रमेश बाबू सुबह सुबह चाय की चुस्की के साथ पेपर पढ़ रहे थे कि तभी उनकी बेटी रिया आई अरे पापा दिखाओ न ये रंगीन पॉमप्लेट किस चीज़ का विज्ञापन है रमेश ने उसे वो पकड़ा दिया रिया ने जैसे ही पढ़ा मारे ख़ुशी के उछल पड़ी मम्मी मम्मी करते हुए रसोई में विमला के पास पहुँच गई। मम्मी सुनों न आज संडे है और हम आज मार्केट जा रहे हैं आपको पता है वो जो श्री शिवम् मॉल है न वहाँ अभी कपड़ों में भारी छूट है और तो और एक पर 20% ,दो लेने पर 30% और अगर हमने तीन कुर्ती ली तो हमें 50% का फ़ायदा होगा और अगर हम दो जींस लेते हैं तो एक हमें फ़्री मिलेगा।

देखो रिया ये सब आकर्षक विज्ञापन लोगों को लुभाने के लिए होते हैं अभी हमें ज़रूरत नहीं है तो हम फ़िज़ूल खर्च क्यों करे और हमें ज़रूरत एक की है तो एक फ़्री पाने के लिए पहले हमें दो जीन्स लेना पड़ेगा। ऐसी तो कई सेल लगती है बेटा क्या हर समय ख़रीदारी करना आवश्यक है और वैसे भी जो माल बिकता नहीं उसे सेल में निकालते हैं तो जब हमें ज़रूरत होगी हम नए स्टाक में ख़रीदी कर लेंगे जब हमें ज़रूरत होगी तब पुराने सामान को ख़रीद कर बेवजह और पुराना करने से अच्छा है हम तुम्हें नए फ़ैशन के कपड़े ख़रीद कर दे देंगे। रिया उदास होकर पापा से बोली पापा देखो न मम्मी को! रमेश ने भी हँस कर उत्तर दिया क्यों उदास हो रही हो मम्मी ने कह तो दिया न जब ज़रूरत होगी वो तुम्हें ख़रीद देंगी अनावश्यक क्यों ख़रीदना फ़ैशन भी पुराना हो जाएगा तुम्हें जाना है तो ऐसे ही घूमकर आ जाना।

आरोप

क़ैदी नम्बर 101 पर लगा आरोप मिथ्या था ये सभी जानते थे पर कोई कुछ बोल नहीं पा रहा था न वकील कुछ कर पा रहे थे न ही पुलिस कुछ कह रही थी क्योंकि उन सभी को पता था जिसने भी मुँह खोला वो क्षण उनकी ज़िंदगी का अंतिम पल होगा सभी विवश और लाचार थे। क़ैदी नम्बर 101 कटघरे में चीख चीख कर कह रहा था जज साहब में बेक़सूर हूँ मैं बेक़सूर हूँ पर वहाँ उसकी सुनने वाला कोई नहीं था क्योंकि सभी को अपनी जान व बीबी बच्चे प्यारे थे। उन सभी पर उस व्यक्ति का इतना ख़ौफ़ था कि सभी डरे सहमे थे किसी में सच को कहने की रक्त नहीं थी।

उन सभी के बीच अपने परिवार के साथ आया क़ैदी नम्बर 101 का बेटा अपने पिता के करुण रुदन को सुन रहा था अपने पिता की बेबसी और लाचारी को देख रहा था वह बड़ी मासूमियत से कह उठा जज साहब मेरे पिता सच में बेगुनाह हैं आप उनकी बात क्यों नहीं सुनते जज साहब उस बेटे का पित्रप्रेम देख अचंभित थे जहाँ परिवार का कोई सदस्य कुछ नहीं कह पाया वहाँ उस बच्चे ने अपने पिता का साथ निभाया जज साहब ने मन ही मन एक फ़ैसला लिया और सुनवाई की तारीख़ बड़ा दी अगली सुनवाई की तारीख़ पंद्रह दिनों बाद की दी।

जज साहब को रात भर नींद नहीं आई उन्होंने बहुत सोचा और तय किया कि मैं किसी बेगुनाह को कैसे सजा दे सकता हूँ अपनी जैन की परवाह किए बिना उन्होंने क़ैदी नम्बर 101 पर लगे आरोप की तह तक जाने का फ़ैसला लिया इसके लिए उन्होंने पुलिसकर्मीयों की मदद ली उन्हें आश्वस्त किया कि उन्हें व उनके परिवार पर वो आँच भी नहीं आने देंगे, उन्हें विश्वास में लेकर उन्होंने सारी सच्चाई हासिल की तत्पश्चात क़ैदी नम्बर 101 के परिवार वालों को आश्वासन दिया कि वो उसे कुछ नहीं होने देंगे। उन्होंने जाने माने वकील एडवोकेट नारायण को इस केस को लड़ने की सलाह दी सारी बातें जानने के बाद एडवोकेट नारायण ने केस अपने हाथ में ले लिया वैसे भी उन्हें ख़तरों से खेलना बहुत पसंद था।

नारायण के केस हाथ में लेते ही केस पलट गया 15 दिनों बाद जब अदालत में मुलज़िम क़ैदी नम्बर 101 लाया गया तो इस बार पुलिसकर्मी घबराए हुए नहीं अपितु तटस्थ नज़र आए उनकी आँखों में इस बार कोई भय नहीं था क्योंकि उनके साथ थे एडवोकेट नारायण की पूरी टीम जो बहुत ही कुशलता से कार्य करती थी। इस बार डर था तो उनकी आँखों में जिन्हें काटनी थी उम्रक़ैद की सजा।

अदालत में एक बाद एक दलीलें पेश होती रहीं और ख़ारिज होती चली गईं अचंभित से बैठे नगर के सबसे नामी व्यक्ति, राजनेता कहें या गुनाहों का देवता जो दम्भ भरता था जिससे सारा शहर काँपता था आज वो विवश और लाचार नज़र आ रहा था क्योंकि सारे सबूत उस क़ैदी नम्बर 101 को बेक़सूर साबित कर रहे थे सारे आरोप झूठे साबित हो गए। एक वक्त था जब क़ैदी नम्बर 101 कहते कहते नहीं थकता था कि में बेगुनाह हूँ जज साहब सारे आरोप जो मुझ पर लगे हैं मिथ्या हैं आज वो बेक़सूर साबित हो गया और बाईं इज्जत बरी हो गया।

आज इस फ़ैसले से जज साहब भी खुश थे जब वो फ़ैसला सुना रहे थे उनकी आत्मा संतुष्ट थी अंदर से वो तो रहे थे उन्हें ख़ुशी थी इस बात की कि उन्होंने किसी निर्दोष को बचा लिया अन्यथा वो अपने आप को कभी माफ़ न कर पाते। दूसरी तरफ़ मुलज़िम आज अपने आपको बड़ा लाचार पा रहा था क्योंकि एडवोकेट नारायण अगर कोई केस अपने हाथ में ले ले तो वो कभी हारते नहीं।

गुनाहों के देवता को या उम्र क़ैद की सजा सुना कर जज साहब ने उस बेटे को गले से लगाया और कहा आज तुम्हारे पिता सिर्फ़ तुम्हारे प्रेम की वजह से बच गए जिसके पास तुम जैसा बेटा हो भला उस पिता का कोई क्या बिगाड़ सकता है। मैंने सही समय पर सही फ़ैसला लेकर तुम्हारे पिता को बचा लिया क्योंकि मुझे पता है पिता को खोने का दर्द जूस दर्द से तुम गुजर रहे थे उसी दर्द से सालों पहले मैं भी गुजर चुका हूँ किसी अमीरज़ादे के कारण मेरे पिता की बलि चढ़ी थी वो सब में दुबारा कैसे देख सकता था और जज साहब की आँखों से अश्रु झलक उठे।

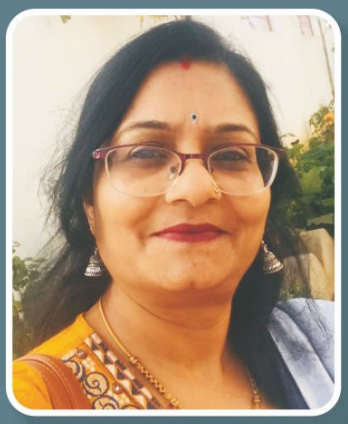

नाम – अदिति रुसिया
जन्म – 16/04/1972
जन्म स्थान – जबलपुर
शिक्षा – बी.ए.(पंडित रविशंकर यूनिवर्सिटी)
पिता – स्व. श्री सतीश चंद्र गुप्ता
माता – श्रीमती मंजुला गुप्ता
पति – श्री संजय रुसिया
बेटा – कार्तिक रुसिया
बेटी – डॉ. कावेरी रुसिया
कार्यक्षेत्र – गृहणी
ईमेल – aditirusia@gmail.com
प्रकाशन – जीवन की धूप छांव (काव्य संग्रह), विचार मंथन (साझा–संकलन), कथा सेतू (साझा–संकलन), वूमन आवाज (नारी से नारी तक), स्त्री विमर्श, रिश्तों की डोर, और भी कई कहानी संग्रह, समय का पहिया, पीर धरा की कई काव्य संग्रह अंतरा शब्दशक्ति, लोकजंग एवं मातृभाषा उन्नयन संस्थान में अनेक रचनाऐं प्रकाशित।
सम्मान – अंतरा शब्दशक्ति सम्मान, भाषा सारथी सम्मान, वुमन आवाज सम्मान, भाव भाषा निर्झरिणी सम्मान, साहित्यकार स्वाभिमान सम्मान साहित्यिक गतिविधियों में कई सम्मान प्राप्त हुए।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/
978-93-94528-48-2
मूल्य- 360/-
15, नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331, मो.- 9009423393, ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com